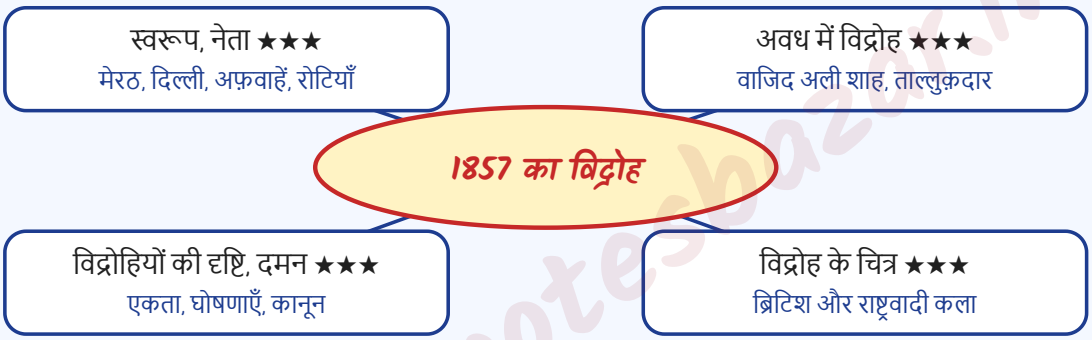
FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 1 of 26

अध्याय 10
विद्रोही और राज : 1857 का आंदोलन और उसके व्याख्यान

विद्रोह का स्वरूप : विद्रोह कैसे आरंभ हुए, संचार की कड़ियाँ, नेता और अनुयायी, अफ़वाहें और भविष्यवाणियाँ, लोग अफ़वाहों पर विश्वास क्यों करते थे · अवध में विद्रोह : "एक चेरी जो एक दिन हमारे मुँह में आ गिरेगी", नवाब का पदच्युत किया जाना, ताल्लुक़दार, सिपाही और किसान · विद्रोही क्या चाहते थे : एकता की दृष्टि, उत्पीड़न के प्रतीकों के विरुद्ध, वैकल्पिक सत्ता · दमन · विद्रोह के चित्र : ब्रिटिश उद्धारकर्ताओं का गुणगान, अंग्रेज़ स्त्रियाँ और ब्रिटेन का सम्मान, प्रतिशोध और बदला, आतंक, राष्ट्रवादी चित्रण

अध्याय का नक्शा (★ = परीक्षा के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण)



पाठ्यक्रम और अंक-भार

भाग 3 (25 अंक); सबसे अधिक पूछे जाने वाले विषयों में से एक : अफ़वाहें और भविष्यवाणियाँ (चिकने कारतूस, हड्डियों का चूर्ण, रोटियाँ), अवध का विलय और ताल्लुक़दार, विद्रोहियों की घोषणाएँ और अज़मगढ़ घोषणा, संचार और समन्वय, दमन, और दृश्य चित्रण (रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ, इन मेमोरियम, जस्टिस, रानी लक्ष्मीबाई)। मानचित्र : विद्रोह के केंद्र (दिल्ली, मेरठ, लखनऊ, कानपुर, झाँसी, ग्वालियर, बरेली, आरा, फ़ैज़ाबाद, अज़मगढ़, कलकत्ता, बनारस, आगरा; NCERT अभ्यास 10 के साथ मानचित्र पर दिखाए गए)।

केंद्र	नेता
दिल्ली	बहादुर शाह ज़फ़र (मुग़ल सम्राट)
कानपुर	नाना साहिब (पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र)
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई
लखनऊ	बिरजिस क़द्र (वाजिद अली शाह के पुत्र), बेगम हज़रत महल
आरा (बिहार)	कुँवर सिंह (ज़मींदार)
बरौत (उत्तर प्रदेश)	शाह मल
फ़ैज़ाबाद	मौलवी अहमदुल्ला शाह
छोटानागपुर	गोनू (सिंहभूम, कोल आदिवासी)

10.1 विद्रोह का स्वरूप ★★★

विद्रोह कैसे आरंभ हुए : 10 मई 1857 की देर दोपहर **मेरठ** की छावनी के सिपाहियों ने बग़ावत कर दी; यह पैदल सेना से आरंभ हुई और घुड़सवार सेना तथा फिर नगर में फैल गई; नगर और आसपास के गाँवों के आम लोग सिपाहियों के साथ आ मिले। सिपाहियों ने शस्त्रागार (बेल ऑफ़ आर्म्स : शस्त्रागार और ख़ज़ाने) पर क़ब्ज़ा किया, गोरे लोगों पर हमला किया और उनके बँगलों और संपत्ति को तहस-नहस करके जला दिया; सरकारी इमारतें (अभिलेखागार, जेल, अदालत, डाकघर, ख़ज़ाना) नष्ट कर दी गईं। **11 मई** को सिपाहियों का एक दल घोड़ों पर सवार होकर **दिल्ली** में घुसा; उन्होंने मुग़ल सम्राट **बहादुर शाह** से मिलने की माँग की, जो अंग्रेज़ों को चुनौती देने को तैयार नहीं थे पर उन्हें अपना समर्थन देने को विवश किया गया; उन्होंने उन्हें अपना नेता घोषित किया। पुराने मुग़ल सम्राट द्वारा बँधता देने से विद्रोह ने स्वतंत्रता-संग्राम का स्वरूप ले लिया।

घटनाओं का क्रम : हर छावनी में सिपाही कार्रवाई का संकेत देते (बंदूक दागना या बिगुल बजाना); वे शस्त्रागार पर क़ब्ज़ा करते और ख़ज़ाना लूटते; सरकारी इमारतों (जेल, ख़ज़ाना, तार-घर, अभिलेखागार, बँगले) पर हमला करते और सभी अभिलेख जला देते; गोरे आदमी से जुड़ी हर चीज़ निशाना बन गई। हिंदी, उर्दू और फ़ारसी में घोषणाओं ने हिंदुओं और मुसलमानों से एकजुट होकर फ़िरंगियों को मिटा देने का आह्वान किया। आम लोग साथ आए, जिससे धनी लोगों और साहूकारों (और वफ़ादार अभिजात वर्ग) पर हमले हुए।

विद्रोहों के बीच संचार (योजना और समन्वय) : समन्वित स्वरूप कुछ हद तक योजना के कारण था : सिपाही या उनके दूत एक छावनी से दूसरी में जाते थे; लोग विद्रोह की योजना बना रहे थे और उसकी चर्चा कर रहे थे। उदाहरण के लिए, मई के आरंभ में 7वीं अवध अनियमित घुड़सवार सेना की बग़ावत के दौरान सिपाहियों ने 48वीं नेटिव इन्फ़ैंट्री को लिखा : "हमने धर्म के लिए कार्य किया है और 48वीं के आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं।" अनेक स्थानों पर सिपाहियों की परिषदें थीं : **कैप्टन हियरसे** ने कानपुर की सिपाही-लाइनों में हर रात होने वाली "पंचायतों" का वर्णन किया (सिपाही साथ रहते, जीवन-शैली साझा करते और अनेक एक ही जाति के थे), जहाँ सामूहिक निर्णय लिए जाते थे।

> **NCERT प्रश्न 2 (योजना और समन्वय) :** हर जगह एक-सा स्वरूप; दूत और पत्र (7वीं अवध से 48वीं नेटिव इन्फ़ैंट्री को); रात में सिपाही पंचायतें (कानपुर); घोषणाएँ; पदानुक्रम वाले नेताओं के दरबार (दिल्ली, लखनऊ); अफ़वाहें और रोटियाँ तेज़ी से फैलीं।

नेता और अनुयायी ★★★

अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए नेतृत्व और संगठन आवश्यक थे; इनके लिए विद्रोही उन लोगों की ओर मुड़े जो ब्रिटिश विजय से पहले नेता रहे थे। दिल्ली में बहादुर शाह; कानपुर में सिपाहियों और नगरवासियों ने पेशवा बाजीराव द्वितीय के उत्तराधिकारी **नाना साहिब** के पास उन्हें अपना नेता बनाने के सिवा कोई विकल्प नहीं छोड़ा; झाँसी में जनदबाव से **रानी** को विवश होना पड़ा; बिहार में स्थानीय ज़मींदार **कुँवर सिंह**; लखनऊ में पदच्युत नवाब वाजिद अली शाह के युवा पुत्र **बिरजिस क़द्र** को नया नवाब घोषित किया गया, जिसमें उसकी माता **बेगम हज़रत महल** ने सक्रिय भाग लिया। प्रायः नेतृत्व अभिजात वर्ग से नहीं था : स्थानीय नेता उभरे, जिन्होंने किसानों, ज़मींदारों और आदिवासियों से विद्रोह का आग्रह किया; अनेक धार्मिक व्यक्ति थे : **शाह मल** (बरौंत परगना, उत्तर प्रदेश; उन्होंने चौरासी देस, 84 गाँवों के मुखियाओं और कृषकों को संगठित किया; जुलाई 1857 में मारे गए); फ़ैज़ाबाद के **मौलवी अहमदुल्ला शाह** (उन्होंने ब्रिटिश शासन के अंत की भविष्यवाणी की; लखनऊ आए; "डंका शाह", नगाड़े वाले आदमी, कहलाए); **गोनू**, सिंहभूम (छोटानागपुर) का एक आदिवासी कृषक जो कोल आदिवासियों का विद्रोही नेता बना।

> **NCERT प्रश्न 1 (सिपाही पुराने शासकों की ओर क्यों मुड़े) :** सिपाहियों को नेतृत्व, संगठन और बँधता चाहिए थी; पूर्व शासकों के पास अनुभव, प्रतिष्ठा और अधिकार था, वे संसाधन जुटा सकते और एक उद्देश्य (पुरानी व्यवस्था की पुनःस्थापना) दे सकते थे; अनेक को अंग्रेज़ों से शिकायतें थीं (विलय, बंद हुई पेंशनें); मुग़ल सम्राट या पेशवा के उत्तराधिकारी के होने से विद्रोह को राजनीतिक स्वरूप और व्यापक जन-आकर्षण मिला।

अफ़वाहें और भविष्यवाणियाँ ★★★

- मेरठ के सिपाहियों ने बहादुर शाह को नई **एनफ़ील्ड राइफ़लों** के **कारतूसों** के बारे में बताया, जिन पर कथित रूप से **गाय और सूअर की चर्बी** लगी थी; उन्हें दाँत से काटने से उनकी जाति और धर्म भ्रष्ट हो जाते। (अफ़वाह 1857 के आरंभ में कलकत्ता के निकट दमदम में शुरू हुई।) ब्रिटिश अधिकारियों ने समझाने का प्रयास किया कि ऐसा नहीं है, पर अफ़वाह जंगल की आग की तरह फैली।

- एक अन्य अफ़वाह : ब्रिटिश सरकार ने हिंदुओं और मुसलमानों की जाति और धर्म नष्ट करने की साज़िश रची थी, बाज़ार में बिकने वाले आटे में **गाय और सूअर की हड्डियों का चूर्ण** मिलाकर; नगरों और छावनियों में लोगों ने आटा छूने से इनकार कर दिया।
- एक भविष्यवाणी कि ब्रिटिश शासन **प्लासी के युद्ध की शताब्दी**, 23 जून 1857, को समाप्त हो जाएगा।
- उत्तर भारत के अनेक भागों से गाँव-गाँव **रोटियाँ** बाँटे जाने की ख़बरें आईं : एक आदमी रात को आता और चौकीदार को एक रोटी देता, उससे पाँच और बनाकर अगले गाँवों में बाँटने को कहता; अर्थ स्पष्ट नहीं था, पर लोगों ने इसे उथल-पुथल के संकेत के रूप में पढ़ा।

लोग अफ़वाहों पर विश्वास क्यों करते थे ? ★★★

अफ़वाहें तभी फैलती हैं जब वे गहरे भय और संदेहों से मेल खाती हैं; 1857 की अफ़वाहें तब समझ में आने लगती हैं जब 1820 के दशक के अंत से ब्रिटिश नीतियों के संदर्भ में देखा जाए :

- **लॉर्ड विलियम बैंटिंक** के अधीन अंग्रेज़ों ने **पश्चिमी शिक्षा, पश्चिमी विचार और पश्चिमी संस्थाएँ** लाकर भारतीय समाज को "सुधारने" की नीतियाँ अपनाईं; भारतीय सुधारकों के सहयोग से उन्होंने अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्थापित किए जो पश्चिमी विज्ञान और उदार कलाएँ पढ़ाते थे।
- उन्होंने **सती** (1829) जैसी प्रथाओं को समाप्त करने और **हिंदू विधवाओं के पुनर्विवाह** (1856) की अनुमति देने के कानून बनाए।
- कुशासन के बहाने और **व्यपगत के सिद्धांत** (लॉर्ड डलहौज़ी) के द्वारा उन्होंने अवध, झाँसी और सतारा जैसे राज्यों ही नहीं बल्कि अनेक अन्य राज्यों को भी मिला लिया; विलय के बाद अंग्रेज़ों ने अपनी प्रशासन-व्यवस्था, कानून और भू-राजस्व पद्धतियाँ लागू कीं।
- ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ; उत्तर भारत में लोगों पर प्रभाव बढ़ा (यह भय कि अंग्रेज़ उनका धर्मांतरण करना चाहते हैं)।
- डलहौज़ी के समय घोषणा की गई कि बहादुर शाह अंतिम मुग़ल राजा होंगे : उनकी मृत्यु के बाद परिवार लाल क़िला छोड़कर दिल्ली में किसी अन्य स्थान पर चला जाएगा; लॉर्ड कैनिंग ने बाद में तय किया कि बहादुर शाह अंतिम मुग़ल होंगे जिन्हें "राजा" कहा जाएगा।

इसलिए उत्तर भारत के लोग मानते थे कि अंग्रेज़ उनकी हर प्रिय वस्तु को नष्ट करने पर तुले हैं : उनका धर्म, सामाजिक रीतियाँ और परंपरागत जीवन-शैली; अफ़वाहें इन्हीं भयों से मेल खाती थीं।

NCERT प्रश्न 3 (धार्मिक विश्वास और 1857) : चिकने कारतूस और हड्डी-चूर्ण की अफ़वाहों ने जाति और धर्म को छुआ; घोषणाओं ने "दीन और धर्म" का आह्वान किया; विद्रोह को ऐसे युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया गया जिसमें हिंदुओं और मुसलमानों को आस्था की रक्षा करनी थी; धार्मिक नेताओं (मौलवी अहमदुल्ला शाह, शाह मल के सहयोगी) ने लोगों को संगठित किया; मिशनरियों और सामाजिक सुधारों को धर्म पर आघात माना गया। पर आर्थिक और राजनीतिक शिकायतें (विलय, राजस्व, प्रस्थिति की हानि) भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण थीं।

10.2 अवध में विद्रोह ★★★

"एक चेरी जो एक दिन हमारे मुँह में आ गिरेगी" : 1851 में गवर्नर-जनरल **लॉर्ड डलहौज़ी** ने अवध राज्य को ऐसा ही बताया। पाँच वर्ष बाद, **1856** में, राज्य का औपचारिक विलय कर लिया गया; क्षेत्रीय विलय चरणों में हुआ : अवध पर **1801** में **सहायक संधि** लादी गई थी (नवाब को अपनी सेना भंग करनी, ब्रिटिश सैनिकों को तैनात होने देना और रेज़ीडेंट की सलाह के अनुसार कार्य करना पड़ा; नवाब अंग्रेज़ों पर निर्भर हो गया)। अंग्रेज़ों की अवध में रुचि इसलिए थी कि उसकी मिट्टी नील और कपास उगाने के लिए अच्छी थी, और यह क्षेत्र ऊपरी भारत का प्रमुख बाज़ार बनाने के लिए आदर्श स्थिति में था।

नवाब का पदच्युत किया जाना : विलय कुशासन के आधार पर किया गया; अंग्रेज़ों ने ग़लत मान लिया कि **वाजिद अली शाह** अलोकप्रिय शासक थे; इसके विपरीत, वे व्यापक रूप से प्रिय थे; जब उन्हें गद्दी से उतारकर कलकत्ता निर्वासित किया गया, तो अनेक लोग शोक-गीत गाते हुए कानपुर तक उनके पीछे गए ("भावनात्मक उथल-पुथल")। नवाब को खोने के व्यापक शोक को विस्थापन के अनुभव ने और बढ़ाया : नवाब के हटने से दरबार और उसकी संस्कृति का विघटन हुआ; संगीतकार, नर्तक, कवि, रसोइए, सेवक, प्रशासनिक अधिकारी, सब तरह के लोगों ने अपनी आजीविका खो दी।

बेदख़ल ताल्लुक़दार : विलय ने केवल नवाब को ही नहीं बल्कि क्षेत्र के **ताल्लुक़दारों** को भी विस्थापित किया : अंग्रेज़ों से पहले ताल्लुक़दार क़िले और सशस्त्र अनुचर रखते थे (कुछ के पास 12,000 तक पैदल सैनिक थे), और जब तक वे नवाब की अधीनता स्वीकार करते और राजस्व चुकाते, पर्याप्त स्वायत्तता भोगते थे। विलय के बाद

अंग्रेज़ ताल्लुक़दारों की शक्ति सहन करने को तैयार नहीं थे : उन्हें निरस्त्र कर दिया गया और उनके क़िले ध्वस्त कर दिए गए। **1856 का संक्षिप्त बंदोबस्त** इस धारणा पर चला कि ताल्लुक़दार घुसपैठिए थे जिनका भूमि में कोई स्थायी हित नहीं था (बल और छल से स्थापित), और वह उन्हें हटाकर भूमि के वास्तविक स्वामियों के साथ बंदोबस्त करना चाहता था; ताल्लुक़दारों ने बहुत कुछ खोया : अंग्रेज़ों से पहले उनके पास 67% गाँव थे; संक्षिप्त बंदोबस्त के बाद यह घटकर 38% रह गया। ताल्लुक़दारों के हटने का अर्थ एक पूरी सामाजिक व्यवस्था का टूटना था।

ताल्लुक़दार और किसान : जिन निष्ठा और संरक्षण के बंधनों ने किसानों को ताल्लुक़दारों से बाँधा था, वे टूट गए। अंग्रेज़ों से पहले ताल्लुक़दार उत्पीड़क थे, पर अनेक उदार पिता-तुल्य दिखाई देते थे : वे किसानों से अनेक प्रकार के देय वसूलते थे पर ज़रूरत के समय सहानुभूतिपूर्ण थे (जैसे ऋण देते, उत्सवों में सहायता करते)। अब अंग्रेज़ों के अधीन किसान राजस्व के अत्यधिक निर्धारण और वसूली के अनम्य तरीकों के सीधे शिकार थे; कठिन समय में छूट या वसूली स्थगित होने की कोई गारंटी नहीं; उत्सवों में कोई सहायता नहीं। अवध जैसे क्षेत्रों में, जहाँ प्रतिरोध तीव्र था, लड़ाई **ताल्लुक़दारों और किसानों ने साथ मिलकर** लड़ी; अनेक ताल्लुक़दार अवध के नवाब के प्रति निष्ठावान थे और अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए लखनऊ में बेगम हज़रत महल से जा मिले; कुछ पराजय में भी उनके साथ रहे।

सिपाही : किसानों की शिकायतें सिपाही-लाइनों में पहुँच गईं, क्योंकि बड़ी संख्या में सिपाही अवध के गाँवों से भर्ती किए गए थे (बंगाल सेना की "पौधशाला"); दशकों से सिपाही कम वेतन और छुट्टी पाने की कठिनाई की शिकायत करते थे; 1850 के दशक तक सिपाहियों और उनके गोरे अधिकारियों के संबंध बदल चुके थे : अधिकारी नस्लीय रूप से अहंकारी हो गए थे, सिपाहियों को नस्लीय हीन मानते और गाली देते थे; 1820 के दशक में अधिकारी मित्रवत थे (अवकाश की गतिविधियों में भाग लेते, उनके साथ कुश्ती लड़ते, तलवारबाज़ी करते, शिकार पर जाते)। भरोसे की जगह अविश्वास आ गया : चिकने कारतूस का प्रश्न इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। सिपाहियों के देहात से संबंध : घर पर सिपाहियों के परिवारों की चिंताएँ (अवध का विलय और संक्षिप्त बंदोबस्त) शीघ्र ही सिपाही-लाइनों तक पहुँच गईं।

NCERT प्रश्न 6 (अवध में विद्रोह व्यापक क्यों था) : विलय (1856) और प्रिय वाजिद अली शाह का पदच्युत होना; दरबार का विघटन और आजीविका की हानि; ताल्लुक़दारों की बेदख़ली (67% से 38%), निरस्त्रीकरण और क़िलों का ध्वंस; किसान पुराने संरक्षण के बिना राजस्व के अत्यधिक निर्धारण और अनम्य वसूली के सामने; अवध से भर्ती सिपाही ग्रामीण शिकायतें, कम वेतन और नस्लीय अपमान साथ लाए; इसलिए सिपाही, ताल्लुक़दार, किसान और दरबारी वर्ग सभी बेगम हज़रत महल और बिरजिस क़द्र के नेतृत्व में साथ मिलकर विद्रोही हुए।

10.3 विद्रोही क्या चाहते थे ★★★

विद्रोहियों का दृष्टिकोण विद्रोही नेताओं द्वारा जारी कुछ घोषणाओं और इश्तहारों (अधिसूचनाओं) से मिलता है; ब्रिटिश वृत्तांत उन्हें ख़ूँखार बताते हैं; पर कुछ घोषणाएँ हमें बताती हैं।

एकता की दृष्टि : 1857 में विद्रोहियों की घोषणाओं ने बार-बार जाति और धर्म के भेद के बिना जनसंख्या के सभी वर्गों से अपील की। अनेक मुस्लिम राजकुमारों द्वारा या उनके नाम से जारी हुई, पर इन्होंने भी हिंदुओं की भावनाओं का ध्यान रखा; विद्रोह को ऐसा युद्ध माना गया जिसमें हिंदुओं और मुसलमानों का समान लाभ या हानि थी। इश्तहारों ने ब्रिटिश-पूर्व हिंदू-मुस्लिम अतीत का स्मरण किया और मुग़ल साम्राज्य के अधीन विभिन्न समुदायों के सह-अस्तित्व का गुणगान किया। बहादुर शाह के अधीन घोषणा ने लोगों से मुहम्मद और महावीर दोनों के झंडों तले लड़ाई में शामिल होने का आह्वान किया। यह उल्लेखनीय है कि विद्रोह के दौरान हिंदुओं और मुसलमानों के बीच धार्मिक विभाजन शायद ही दिखाई दिए, यद्यपि अंग्रेज़ों ने ऐसे विभाजन पैदा करने के प्रयास किए : दिसंबर 1857 में बरेली (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) में अंग्रेज़ों ने हिंदू आबादी को मुसलमानों के विरुद्ध भड़काने के लिए 50,000 रुपये ख़र्च किए; प्रयास विफल रहा।

उत्पीड़न के प्रतीकों के विरुद्ध : घोषणाओं ने ब्रिटिश शासन (फ़िरंगी राज) से जुड़ी हर चीज़ को पूरी तरह अस्वीकार किया : अंग्रेज़ों की निंदा उन भूमियों के लिए की गई जिनका उन्होंने विलय किया और उन संधियों के लिए जो उन्होंने तोड़ीं; लोग क्रुद्ध थे कि ब्रिटिश भू-राजस्व बंदोबस्तों ने भूस्वामियों को बेदख़ल किया, विदेशी वाणिज्य ने शिल्पकारों और बुनकरों को बर्बाद किया; ब्रिटिश शासन के हर पक्ष पर प्रहार किया गया, और फ़िरंगी पर जानी-पहचानी और प्रिय जीवन-शैली को नष्ट करने का आरोप लगाया गया। विद्रोही उस जगत को पुनःस्थापित करना चाहते थे। विद्रोहियों ने साहूकारों और धनी लोगों पर अंग्रेज़ों के सहयोगी के रूप में हमला किया (जैसे अनेक स्थानों पर उन्होंने साहूकारों के घरों पर हमला किया और बही-खाते जला दिए)।

आज़मगढ़ घोषणा (25 अगस्त 1857) : इसमें ज़मींदारों (ऊँचा राजस्व, नीलामियाँ), व्यापारियों (नील, कपड़े और अन्य वस्तुओं के व्यापार पर अंग्रेज़ों का एकाधिकार; कर और स्टाम्प शुल्क), सरकारी कर्मचारियों (भारतीयों को कम वेतन, कोई सम्मान नहीं, ऊँचे पद नहीं), शिल्पकारों (अंग्रेज़ी वस्तुओं के कारण बेरोज़गार) और पंडितों तथा फ़क़ीरों (अंग्रेज़ हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों के शत्रु थे) की शिकायतों की सूची थी।

वैकल्पिक सत्ता की खोज : ब्रिटिश शासन के ढहते ही दिल्ली, लखनऊ और कानपुर जैसे स्थानों में विद्रोहियों ने सत्ता और प्रशासन की किसी प्रकार की संरचना स्थापित करने का प्रयास किया : मुख्यतः मुग़ल प्रशासन के नमूने पर (पदानुक्रम, राजस्व वसूली, सैनिकों को वेतन, लूट रोकने का आदेश); उन्होंने युद्धों की योजना बनाई; पर ये प्रयास अल्पकालिक थे।

10.4 दमन ★★★

- विद्रोह को **कानूनों** की एक शृंखला की सहायता से दबाया गया : सैनिक भेजने से पहले अंग्रेज़ों ने मई और जून 1857 में कानून पारित किए : उत्तर भारत में **सैनिक कानून** (मार्शल लॉ) लागू हुआ; सैन्य अधिकारियों और यहाँ तक कि आम अंग्रेज़ों को भी विद्रोह के संदिग्ध भारतीयों पर मुक़दमा चलाने और दंड देने की शक्ति दी गई; कानून और मुक़दमे की सामान्य प्रक्रियाएँ स्थगित कर दी गईं; विद्रोह का दंड मृत्यु था।
- इन कानूनों और ब्रिटेन से आई अतिरिक्त सेनाओं से लैस होकर अंग्रेज़ों ने दो मोर्चों पर विद्रोह को कुचलने के लिए कार्रवाई की : **दिल्ली** पर **सितंबर 1857** में पुनः अधिकार हुआ (अभियान जून में आरंभ हुआ, भारी लड़ाई और हताहतों के बाद नगर सितंबर के अंत में गिरा); **कानपुर और लखनऊ** पर अंग्रेज़ों ने मार्च 1858 तक अधिकार कर लिया।
- अंग्रेज़ों ने विशाल पैमाने पर सैन्य शक्ति का प्रयोग किया; पर अवध (ताल्लुक़दार, किसान) में उन्होंने ताल्लुक़दारों को उनकी जागीरें लौटाने का वादा करके एकता तोड़ने का प्रयास किया; विद्रोही भूस्वामी बेदख़ल किए गए, वफ़ादार पुरस्कृत हुए; अनेक ताल्लुक़दार लड़ते हुए मारे गए, या नेपाल भाग गए जहाँ वे बीमारी या भूख से मरे।
- देहात में अंग्रेज़ों को प्रतिरोध का सामना करना पड़ा : पूरी जनसंख्या शत्रुतापूर्ण थी, इसलिए उन्होंने पूरे-पूरे गाँवों के विरुद्ध बल का प्रयोग किया; जैसे उन्होंने विद्रोहियों को सार्वजनिक रूप से फाँसी दी, तोपों से उड़ाया।
- बहादुर शाह पर मुक़दमा चलाकर उन्हें **रंगून** निर्वासित किया गया (1858), जहाँ 1862 में उनकी मृत्यु हुई।

NCERT प्रश्न 5 (विद्रोह को कुचलने के क़दम) : सैनिक कानून; विशेष कानून (अधिकारियों और अंग्रेज़ों द्वारा मुक़दमा और दंड; विद्रोह के लिए मृत्यु); ब्रिटेन से अतिरिक्त सेना; दोहरा अभियान (दिल्ली, कानपुर और लखनऊ); विशाल पैमाने पर सैन्य शक्ति; विद्रोहियों में फूट डालना (ताल्लुक़दारों से वादे, वफ़ादारों को पुरस्कार); उदाहरणात्मक दंड; बहादुर शाह का निर्वासन। **प्रश्न 4 (विद्रोहियों में एकता के उपाय) :** सभी जातियों और धर्मों से अपील करने वाली घोषणाएँ; मुग़ल अतीत का स्मरण; साझा नेता (बहादुर शाह); अंग्रेज़ों द्वारा फूट डालने के प्रयासों को अस्वीकार (बरेली); दूतों और पंचायतों के द्वारा समन्वय।

10.5 विद्रोह के चित्र ★★★

अंग्रेज़ों और भारतीयों द्वारा बनाए चित्र (चित्रकारियाँ, पेंसिल रेखाचित्र, नक़्क़ाशियाँ, पोस्टर, कार्टून, बाज़ार-छपाइयाँ) एक महत्त्वपूर्ण अभिलेख हैं; हमें उनका विश्लेषण कलाकार के उद्देश्य और प्रतिनिधित्व किए गए दृष्टिकोण के लिए करना चाहिए।

- **ब्रिटिश उद्धारकर्ताओं का गुणगान : थॉमस जोन्स बार्कर** (1859) का "**रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ**" : जब विद्रोही सेनाओं ने लखनऊ की घेराबंदी की, तो हेनरी लॉरेंस (कमिश्नर) ने ईसाइयों को इकट्ठा करके रेज़ीडेंसी में शरण ली; लॉरेंस मारा गया, पर कर्नल इंगलिस के नेतृत्व में रेज़ीडेंसी टिकी रही; 25 सितंबर को जेम्स आउटरम और हेनरी हैवलॉक ने विद्रोहियों को चीरते हुए सैन्य टुकड़ी को सहायता दी; 20 दिन बाद कॉलिन कैंपबेल ने अतिरिक्त सेना के साथ घेराबंदी तोड़ी और सैन्य टुकड़ी को छुड़ाया। कैंपबेल, आउटरम और हैवलॉक केंद्र में हैं; चित्र ने छुड़ाए जाने के क्षण का गुणगान किया; रेज़ीडेंसी की रक्षा ब्रिटिश प्रतिरोध, वीरता और शक्ति का प्रतीक बन गई।
- **अंग्रेज़ स्त्रियाँ और ब्रिटेन का सम्मान :** स्त्रियों और बच्चों के विरुद्ध हिंसा की समाचार-पत्रों की ख़बरों ने बदले और प्रतिशोध की जन-माँगें भड़काईं; कलाकारों ने आघात को अभिव्यक्त किया : **जोसेफ़ नोएल पैंटन** (1859) की "**इन मेमोरियम**" : अंग्रेज़ स्त्रियाँ और बच्चे एक घेरे में सिमटे, असहाय और निर्दोष, अपरिहार्य (अपमान, हिंसा, मृत्यु) की प्रतीक्षा करते; चित्र क्रोध और आक्रोश जगाता है। अन्य चित्र स्त्रियों को वीर के रूप में, अपनी रक्षा करते दिखाते हैं : कानपुर में विद्रोहियों से अपनी रक्षा करती **मिस व्हीलर**, सिपाहियों पर गोली चलाती हुई;

इस कृत्य को सम्मानित अंग्रेज़ स्त्रियों के सम्मान की रक्षा के रूप में देखा गया; भूमि पर पड़ी बाइबिल ईसाई धर्म की रक्षा का संकेत देती है।

- **प्रतिशोध और बदला :** "**जस्टिस**" (पंच में सितंबर 1857 में छपा एक चित्र : तलवार और ढाल लिए एक रूपकात्मक स्त्री, विद्रोहियों को रौंदती हुई, जबकि भारतीय स्त्रियाँ और बच्चे सहमे हुए हैं); बदले की माँगें बढ़ीं; चित्रों और कार्टूनों ने क्रूर फाँसियाँ (विद्रोहियों को तोपों से उड़ाना, फाँसी) दिखाईं।
- **आतंक :** आतंक पैदा करने के लिए सार्वजनिक फाँसियाँ; पंच में कार्टून "द क्लेमेंसी ऑफ़ कैनिंग" ने गवर्नर-जनरल कैनिंग का उसकी नरमी के लिए उपहास किया (बदले की माँगें इतनी प्रबल थीं कि उसके नरमी बरतने के प्रयासों का मज़ाक उड़ाया गया; उसे "क्लेमेंसी कैनिंग" कहा गया)।
- **राष्ट्रवादी चित्रण :** जैसे-जैसे राष्ट्रीय आंदोलन विकसित हुआ, 1857 "**प्रथम स्वतंत्रता संग्राम**" (वी.डी. सावरकर, 1909) बन गया; **रानी लक्ष्मीबाई** जैसे नेताओं को सैनिकों को युद्ध में ले जाने वाली वीर आकृतियों के रूप में दर्शाया गया (एक हाथ में तलवार, दूसरे में घोड़े की लगाम), जो ब्रिटिश शासन का प्रतिरोध करने के संकल्प का प्रतीक हैं; सुभद्राकुमारी चौहान की कविता "ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी"; बच्चों की पुस्तकों और लोकगीतों ने विद्रोहियों का गुणगान किया।



चित्र 10.10 "रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ", थॉमस जोन्स बार्कर, 1859



चित्र 10.11 "इन मेमोरियम", जोसेफ़ नोएल पैटन, 1859



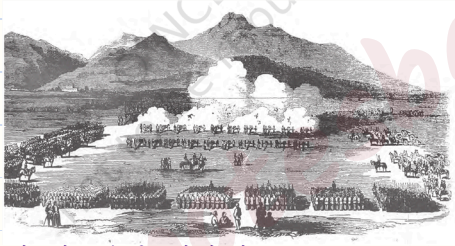
चित्र 10.12 कानपुर में सिपाहियों से अपनी रक्षा करती मिस व्हीलर



चित्र 10.13 "जस्टिस", पंच, 12 सितंबर 1857



चित्र 10.14 "बंगाल के बाघ पर ब्रिटिश सिंह का प्रतिशोध", पंच, 1857



चित्र 10.15 पेशावर में विद्रोहियों को फाँसी : तोपों से उड़ाना, इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़, 3 अक्तूबर 1857



चित्र 10.16 पेशावर में विद्रोही सिपाहियों को फाँसी, इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़, 3 अक्तूबर 1857



चित्र 10.17 "द क्लेमेंसी ऑफ़ कैनिंग", पंच, 24 अक्तूबर 1857

SAMPLE | notesbazar.in



चित्र 10.18 घोड़े पर सवार योद्धा के रूप में रानी लक्ष्मीबाई (फ़िल्म पोस्टर)

(चित्र NCERT भारतीय इतिहास के कुछ विषय भाग 3, विषय 10 से)

NCERT के अभ्यास-प्रश्न, हल सहित ★★★

7. विद्रोही क्या चाहते थे ? विभिन्न समूहों की दृष्टि में क्या भेद था ?

उत्तर। कुल मिलाकर : ब्रिटिश शासन (फ़िरंगी राज) का अंत और ब्रिटिश-पूर्व व्यवस्था की पुनःस्थापना, हिंदू-मुस्लिम एकता के साथ; विलय, तोड़ी गई संधियों, राजस्व बंदोबस्तों, विदेशी वाणिज्य और धर्म पर आघातों को अस्वीकार। समूह : सिपाही सम्मान, बेहतर वेतन, जाति और धर्म की रक्षा चाहते थे; पूर्व शासक (नाना साहिब, लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल) अपने राज्य, उपाधियाँ और पेंशनें पुनः चाहते थे; ताल्लुक़दार और ज़मींदार अपनी भूमि और शक्ति वापस तथा कम राजस्व चाहते थे; किसान राजस्व और साहूकारों से राहत चाहते थे; शिल्पकार रोज़गार चाहते थे (अंग्रेज़ी वस्तुओं के विरुद्ध); धार्मिक नेता आस्था की रक्षा चाहते थे; व्यापारी ब्रिटिश एकाधिकारों से मुक्ति चाहते थे। अज़मगढ़ घोषणा इन विभिन्न माँगों को दर्शाती है।

8. दृश्य चित्रण हमें क्या बताते हैं ? उनका विश्लेषण कैसे किया जाता है ?

उत्तर में उल्लिखित चित्र (चित्र 10.10–10.18) ऊपर खंड 10.5 में दिखाए गए हैं; उनमें से दो यहाँ दोहराए गए हैं।



"जस्टिस", पंच, 1857 (चित्र 10.13)



रानी लक्ष्मीबाई (चित्र 10.18)

उत्तर। ये अलग-अलग दृष्टिकोण दिखाते हैं : ब्रिटिश चित्र (रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ, इन मेमोरियम, मिस व्हीलर, जस्टिस, पंच के कार्टून) ने ब्रिटिश नायकों का गुणगान किया, बदले की माँग के लिए स्त्रियों की पीड़ा दिखाई और क्रूर दमन को उचित ठहराया; राष्ट्रवादी चित्र (रानी लक्ष्मीबाई) ने विद्रोहियों का गुणगान किया और स्वतंत्रता संघर्ष को प्रेरित किया। इतिहासकार विश्लेषण करते हैं कि

उन्हें किसने, किनके लिए, कब और क्यों बनाया; प्रयुक्त प्रतीक; किस पर बल दिया गया और क्या छोड़ दिया गया; उन्होंने जनमत को कैसे आकार दिया; और उनकी तुलना ग्रंथों से करते हैं।

9. एक दृश्य और एक ग्रंथ : विजेता और पराजित।

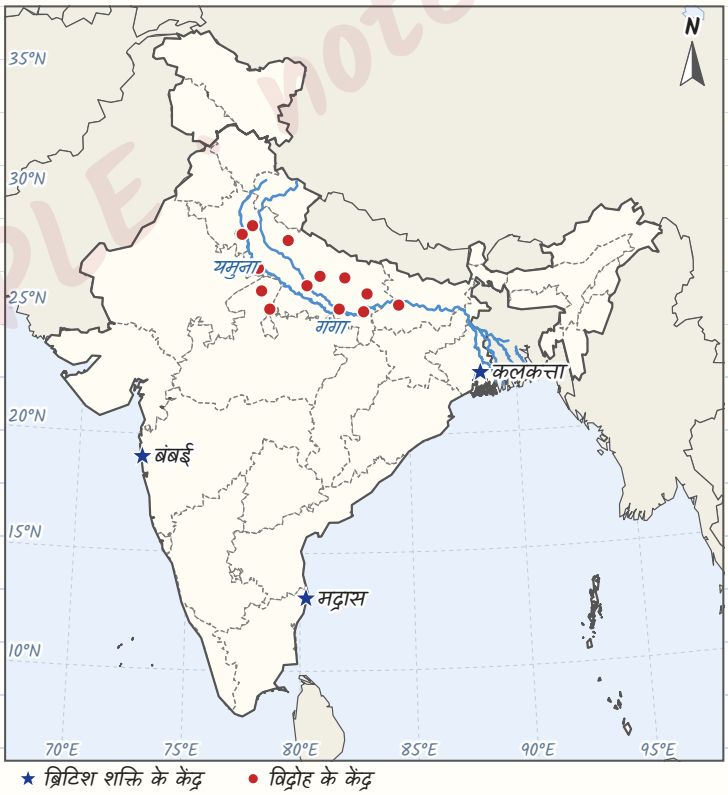


उत्तर में प्रयुक्त दृश्य : 'रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ" (NCERT चित्र 10.10)

उत्तर। दृश्य : "रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ" (विजेता का दृष्टिकोण) : ब्रिटिश सेनापति नायकों के रूप में, विद्रोही अनुपस्थित या पराजित, बचाव ब्रिटिश शक्ति की विजय के रूप में। ग्रंथ : अज़मगढ़ घोषणा (पराजित) : अंग्रेज़ों द्वारा ज़मींदारों, व्यापारियों, कर्मचारियों, शिल्पकारों और धार्मिक नेताओं के उत्पीड़न की सूची, जो विद्रोह को उचित ठहराती है। दोनों मिलकर एक ही घटनाओं पर विपरीत दृष्टिकोण दिखाते हैं।

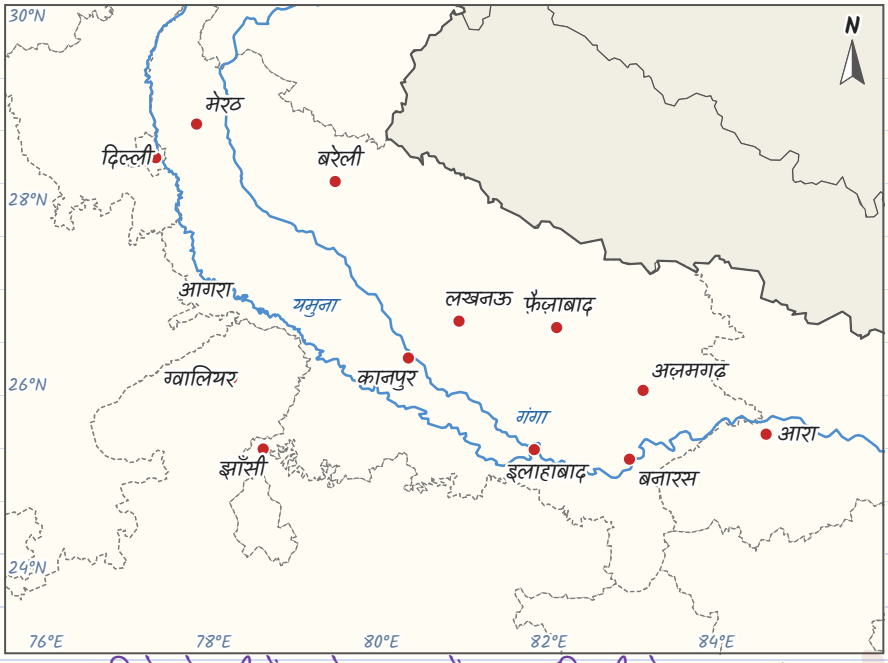
10. भारत के रेखा-मानचित्र पर कलकत्ता (कोलकाता), बंबई (मुंबई) और मद्रास (चेन्नई), 1857 में ब्रिटिश शक्ति के तीन प्रमुख केंद्र, अंकित कीजिए। मानचित्र 1 और 2 देखकर उन क्षेत्रों को अंकित कीजिए जहाँ विद्रोह सबसे व्यापक था। ये क्षेत्र औपनिवेशिक नगरों से कितने निकट या दूर थे ?

उत्तर। ब्रिटिश शक्ति के केंद्र : कलकत्ता, बंबई, मद्रास। विद्रोह सबसे व्यापक उत्तर में : मेरठ, दिल्ली, आगरा, कानपुर, लखनऊ, झाँसी, ग्वालियर, बरेली, इलाहाबाद, बनारस, आरा, अज़मगढ़, फ़ैज़ाबाद; ये बंबई और मद्रास से बहुत दूर और कलकत्ता से काफ़ी दूर थे।



NCERT मानचित्र-कार्य : 1857 में ब्रिटिश शक्ति के तीन केंद्र और उत्तर में विद्रोह के प्रमुख केंद्र (नीचे के बड़े मानचित्र पर नामांकित)

SAMPLE - notesbazar.in



विद्रोह के वही केंद्र बड़े आकार में : उत्तर (दिल्ली से आरा तक)

परीक्षा के महत्त्वपूर्ण प्रश्न

सहायक संधि क्या थी ? 2

> **उत्तर।** *लॉर्ड वेलेज़ली (1798) द्वारा बनाई एक व्यवस्था : सहयोगियों को अपनी सेनाएँ भंग करनी, ब्रिटिश सैनिकों (उनका ख़र्च चुकाते हुए) और एक रेज़ीडेंट को स्वीकार करना और किसी अन्य से गठबंधन नहीं करना था; 1801 में अवध पर लादी गई।*

1850 के दशक तक सिपाही अपने अधिकारियों से अप्रसन्न क्यों थे ? 2

> **उत्तर।** *अधिकारी नस्लीय रूप से अहंकारी और गाली-गलौज करने वाले हो गए थे, जबकि 1820 के दशक के अधिकारी मित्रवत थे; कम वेतन और छुट्टी पाने में कठिनाई।*

CBSE बोर्ड प्रश्न 2024-2026, पूर्ण हल सहित ★★★

2024 (61/1-5), 2025 (61/1, 2, 4-7) और 2026 (61/1-5) के 16 बोर्ड प्रश्न-पत्रों में इस विषय से पूछा गया हर प्रश्न, अंक-योजना और NCERT पर आधारित पूर्ण उत्तरों सहित। दोहराए गए प्रश्न सभी प्रश्न-पत्र कोडों के साथ एक बार दिखाए गए हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक)

CBSE 2025 · 61/1/1 *स्तंभ-I का मिलान स्तंभ-II से कीजिए और निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए : स्तंभ-I (1857 के विद्रोह का नेतृत्व) : a. शाहमल b. कुँवर सिंह c. बिरजिस क़द्र d. नाना साहब; स्तंभ-II (क्षेत्र) : I. लखनऊ II. कानपुर III. बड़ौत IV. आरा। विकल्प : (A) a-II, b-III, c-IV, d-I (B) a-III, b-IV, c-I, d-II (C) a-III, b-II, c-I, d-IV (D) a-IV, b-II, c-III, d-I* 1

> **उत्तर।** **(B)** *शाह मल – बरौत परगना (III), कुँवर सिंह – आरा (IV), बिरजिस क़द्र – लखनऊ (I), नाना साहिब – कानपुर (II)।*

CBSE 2025 · 61/1/1 *1798 में लॉर्ड वेलेज़्ली द्वारा पेश की गई 'सहायक संधि' की मुख्य विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी थी ? (A) अंग्रेज़ों द्वारा लाई गई मुक्त व्यापार नीति (B) अंग्रेज़ों द्वारा देशी सेना का रखरखाव (C) अंग्रेज़ों द्वारा पश्चिमी रीति-रिवाज़ों को लागू करना (D) अंग्रेज़ों द्वारा देशी क्षेत्र की सुरक्षा* 1

> **उत्तर।** **(D)** *अंग्रेज़ अपने सैनिक वहाँ तैनात करके सहयोगी के क्षेत्र की रक्षा करते थे, जिनका ख़र्च सहयोगी उठाता था, और वह अंग्रेज़ों की अनुमति के बिना अपनी सेना नहीं रख सकता या गठबंधन नहीं कर सकता था।*

CBSE 2025 · 61/2/I 1857 के विद्रोह के संदर्भ में निम्नलिखित में से विषम की पहचान कीजिए : (A) आरा : कुँवर सिंह (B) बड़ौत : शाहमल (C) सिंहभूम : गोनू (D) हैदराबाद : मौलवी अहमदुल्लाह शाह

उत्तर। (D) मौलवी अहमदुल्ला शाह (फ़ैज़ाबाद के) ने लखनऊ में संघर्ष किया, हैदराबाद में नहीं।

CBSE 2025 · 61/2/I नीचे दिए गए उपयुक्त विकल्प के साथ रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए : 1857 का विद्रोह भारत में _____ वंश के अंत का प्रतीक था। (A) मराठा (B) राजपूत (C) सिंधिया (D) मुग़ल

उत्तर। (D) मुग़ल। बहादुर शाह ज़फ़र पर मुक़दमा चलाकर उन्हें रंगून निर्वासित किया गया (1858)।

CBSE 2025 · 61/4/I; CBSE 2024 · 61/3/I "खूब लड़ी मर्दानी, वो तो झाँसी वाली रानी थीं" – यह पंक्ति निम्नलिखित में से किसने लिखी ? (A) महादेवी वर्मा (B) हरिवंशराय बच्चन (C) सुभद्रा कुमारी चौहान (D) रामधारी सिंह दिनकर

उत्तर। (C) सुभद्राकुमारी चौहान।

CBSE 2025 · 61/4/I 1857 के विद्रोह में नेताओं की भूमिका के संदर्भ में रिक्त स्थान को भरने के लिए निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए। नाना साहेब : कानपुर; कुँवर सिंह : _____। (A) ग्वालियर (B) मेरठ (C) सिंहभूम (D) आरा

उत्तर। (D) आरा (बिहार), जहाँ ज़मींदार कुँवर सिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया।

CBSE 2025 · 61/5/I नीचे दो कथन दिए गए हैं, अभिकथन (A) और कारण (R)। इनको ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए : अभिकथन (A) : लॉर्ड वेलेज़्ली द्वारा शुरू की गई सहायक संधि प्रणाली ने भारतीय रियासतों को काफी कमज़ोर कर दिया। कारण (R) : सहायक संधि के तहत भारतीय शासकों ने अपनी सैन्य स्वायत्तता खो दी। विकल्प : (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है। (B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परन्तु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या **नहीं** करता है। (C) अभिकथन (A) सही है, परन्तु कारण (R) ग़लत है। (D) अभिकथन (A) ग़लत है, परन्तु कारण (R) सही है।

उत्तर। (A) सहयोगी अपनी सेना नहीं रख सकते थे और उन्हें ब्रिटिश सैनिकों का ख़र्च चुकाना पड़ता था, इसलिए उन्होंने शक्ति खो दी और निर्भर हो गए।

CBSE 2025 · 61/5/I अंग्रेज़ों की निम्नलिखित में से किस नीति के कारण भारतीय सैनिकों में असंतोष पैदा हुआ, जिसने 1857 के विद्रोह में योगदान दिया ? (A) सहायक संधि की नीति (B) डलहौज़ी की विलय नीति (C) चर्बी वाले कारतूसों के साथ एनफ़ील्ड राइफलों का उपयोग (D) पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की शुरुआत

उत्तर। (C) सिपाहियों को भय था कि कारतूस, जिन्हें दाँत से काटना पड़ता था, गाय और सूअर की चर्बी से चिकने किए गए हैं।

CBSE 2025 · 61/6/I अंग्रेज़ अवध क्षेत्र का अधिग्रहण क्यों करना चाहते थे ? निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए : (A) अवध में राष्ट्रवादी आंदोलन को दबाने के लिए। (B) अवध के समृद्ध संसाधनों को पाने के लिए। (C) भारत के पश्चिमी भाग पर नियंत्रण मज़बूत करने के लिए। (D) अंग्रेज़ों का मध्य भारत में सैन्य नियंत्रण बढ़ाने के लिए।

उत्तर। (B) डलहौज़ी अवध की उपजाऊ मिट्टी, जो नील और कपास के लिए आदर्श थी, और बाज़ार के रूप में उसकी स्थिति चाहता था (1856 में कुशासन के आधार पर विलय)।

CBSE 2025 · 61/6/I निम्नलिखित में से सिंहभूम के उस स्थानीय नेता की पहचान कीजिए जिसने 1857 के विद्रोह में किसानों को शामिल करने का नेतृत्व किया। (A) शाह मल (B) बिरजिस क़द्र (C) गोनू (D) कुँवर सिंह

उत्तर। (C) गोनू, सिंहभूम (छोटानागपुर) का एक आदिवासी कृषक, जिसने कोल आदिवासियों का नेतृत्व किया।

CBSE 2025 · 61/7/I 1850 के दशक के दौरान अवध को 'बंगाल सेना की नर्सरी' क्यों कहा जाता था ? निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए। (A) ब्रिटिश शासन के प्रति कड़े प्रतिरोध के लिए (B) बंगाल सेना के लिए प्रमुख भर्ती स्थल (C) ब्रिटिश सैन्य प्रशिक्षण केंद्र के लिए (D) ब्रिटिश सैन्य नेताओं का आधार क्षेत्र

> **उत्तर। (B)** बड़ी संख्या में सिपाही अवध के गाँवों से आए थे; विलय और भूमि-बंदोबस्त पर उनकी शिकायतों ने उन्हें किसानों से जोड़ा।

CBSE 2025 · 61/7/I 1857 के विद्रोह के नेताओं के संदर्भ में, निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कर रिक्त स्थान भरिए। आरा (बिहार) : कुँवर सिंह; _____ : बिरजिस क़द्र। (A) अवध (B) कानपुर (C) ग्वालियर (D) लखनऊ

> **उत्तर। (D) लखनऊ** : पदच्युत नवाब वाजिद अली शाह के युवा पुत्र को नया नवाब घोषित किया गया।

CBSE 2026 · 61/1/I 1857 के विद्रोह को अंग्रेज़ों ने एक गंभीर खतरा क्यों माना ? सबसे उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए : (A) इसने उनके वैश्विक व्यापार को नुकसान पहुँचाया। (B) इसने विश्व के समस्त औपनिवेशिक शासन को हिला दिया। (C) इसने भारत के सभी तबकों को आपस में जोड़ दिया। (D) यह दक्षिण भारत में उनकी हार का कारण बना।

> **उत्तर। (C)** विभिन्न समुदायों के सिपाही, किसान, ज़मींदार, ताल्लुक़दार, राजकुमार और धार्मिक नेता एक साथ आए।

CBSE 2026 · 61/1/I 1857 के विद्रोह के दौरान स्थानीय नेताओं के संदर्भ में सही युग्म का चयन कीजिए। सूची-I (स्थानीय नेता) – सूची-II (क्षेत्र) : (A) गोनू – छोटानागपुर (B) शाहमल – हैदराबाद (C) कुँवर सिंह – कानपुर (D) मौलवी अहमदुल्ला शाह – आरा

> **उत्तर। (A) गोनू – छोटानागपुर (सिंहभूम)।** शाह मल – बरौत; कुँवर सिंह – आरा; अहमदुल्ला शाह – लखनऊ/फ़ैज़ाबाद।

CBSE 2026 · 61/2/I निम्नलिखित में से विषम की पहचान कीजिए : (अंग्रेज़ अफ़सर – नीति) : (A) डलहौज़ी – व्यपगत की नीति (B) कॉर्नवालिस – इस्तमरारी बंदोबस्त (C) वेलेज़्ली – पाश्चात्य शिक्षा (D) हार्डिंग – सिपाहियों के लिए एनफ़ील्ड राइफ़ल

> **उत्तर। (C)** वेलेज़ली का संबंध सहायक संधि (1798) से है; पश्चिमी शिक्षा बेंटिंक से जुड़ी है।

CBSE 2026 · 61/2/I नाना साहेब के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं ? सही विकल्प का चयन कीजिए : I. नाना साहेब पेशवा बाजीराव-द्वितीय के उत्तराधिकारी थे। II. नाना साहेब ने कानपुर से 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया। III. 1857 के प्रारंभ में ही उनका विद्रोह ढह गया। IV. 1857 में नाना साहेब नेपाल चले गए। विकल्प : (A) केवल I और III सही हैं। (B) केवल II और IV सही हैं। (C) केवल III और IV सही हैं। (D) केवल I और II सही हैं।

> **उत्तर। (D) केवल I और II।** उन्होंने 1857 के अंत तक संघर्ष किया और बाद में (1859) नेपाल भाग गए।

CBSE 2026 · 61/3/I निम्नलिखित में से कौन-सा 1857 के विद्रोह का प्रमुख केंद्र नहीं था ? (A) दिल्ली (B) झाँसी (C) आरा (D) बम्बई

> **उत्तर। (D) बंबई।**

CBSE 2026 · 61/3/I नीचे दो कथन दिए गए हैं, अभिकथन (A) और कारण (R)। इनको ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए : अभिकथन (A) : 1857 के विद्रोह में सिपाहियों ने बहादुर शाह ज़फ़र को अपना नेता घोषित किया। कारण (R) : बहादुर शाह ज़फ़र के समर्थन से 1857 के विद्रोह को वैधता मिली। विकल्प : (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है। (B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या **नहीं** करता है। (C) अभिकथन (A) सत्य है, परन्तु कारण (R) असत्य है। (D) अभिकथन (A) असत्य है, परन्तु कारण (R) सत्य है। 1

उत्तर। (A) मुग़ल नाम पूरे उत्तर भारत में सत्ता का प्रतीक था।

CBSE 2026 · 61/4/I निम्नलिखित क्षेत्रों में से कौन-सा 1857 के विद्रोह का प्रमुख केंद्र नहीं था ? (A) कानपुर (B) मेरठ (C) लखनऊ (D) मैसूर 1

उत्तर। (D) मैसूर।

CBSE 2026 · 61/4/I नीचे दो कथन दिए गए हैं, अभिकथन (A) और कारण (R)। इनको ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए : अभिकथन (A) : 1850 के दशक में अवध को 'बंगाल की सेना की नर्सरी' कहा जाता था। कारण (R) : सम्पूर्ण भारत से यहाँ अधिकांश संख्या में सिपाहियों की भर्ती की जाती थी। विकल्प : (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है। (B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या **नहीं** करता है। (C) अभिकथन (A) सत्य है, परन्तु कारण (R) असत्य है। (D) अभिकथन (A) असत्य है, परन्तु कारण (R) सत्य है। 1

उत्तर। (C) A सत्य है, पर R असत्य : सिपाही स्वयं **अवध** के गाँवों से भर्ती हुए थे, पूरे भारत से नहीं।

CBSE 2026 · 61/5/I निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र 1857 के विद्रोह का मुख्य केन्द्र नहीं था ? (A) ग्वालियर (B) आरा (C) सिंहभूम (D) हैदराबाद 1

उत्तर। (D) हैदराबाद।

CBSE 2026 · 61/5/I नीचे दो कथन अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। इनको ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए : अभिकथन (A) : अंग्रेज़ों ने 1857 के विद्रोह को आसानी से दबा दिया। कारण (R) : अंग्रेज़ों ने विद्रोह को दबाने हेतु कई कानून पारित किए। विकल्प : (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है। (B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परन्तु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या **नहीं** करता है। (C) अभिकथन (A) सही है, परन्तु कारण (R) ग़लत है। (D) अभिकथन (A) ग़लत है, परन्तु कारण (R) सही है। 1

उत्तर। (D) A असत्य है : अंग्रेज़ों को कठिनाई हुई; इसमें उन्हें लगभग दो वर्ष की लड़ाई लगी, विशेषकर अवध में। R सत्य है : पूरे उत्तर भारत में सैनिक कानून लागू हुआ और सैन्य अधिकारियों (और आम अंग्रेज़ों) को विद्रोहियों पर मुक़दमा चलाने और दंड देने की शक्तियाँ मिलीं।

CBSE 2024 · 61/1/I स्तंभ I का मिलान स्तंभ II से कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए : स्तंभ I (वाइसराय के नाम) : 1. लॉर्ड वेलेज़्ली 2. लॉर्ड डलहौज़ी 3. लॉर्ड बेंटिक 4. लॉर्ड हार्डिंग; स्तंभ II (भूमिका) : (i) अधिग्रहण नीतियों की शुरुआत की (ii) सहायक संधि की शुरुआत की (iii) चिकने कारतूसों की शुरुआत की (iv) सुधारक नीतियों की शुरुआत की। विकल्प : (A) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i), 4-(iv) (B) 1-(iv), 2-(iii), 3-(ii), 4-(i) (C) 1-(ii), 2-(i), 3-(iv), 4-(iii) (D) 1-(i), 2-(iv), 3-(iii), 4-(ii) 1

उत्तर। (C)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 14 of 26

CBSE 2024 · 61/1/1 निम्नलिखित विद्रोहियों में से किसने उत्तर प्रदेश में ब्रिटिश अधिकारी के बंगले पर कब्ज़ा कर लिया और 1857 के दौरान विवादों को निपटाने के लिए 'न्याय भवन' में बदल दिया ? (A) शाह मल (B) मौलवी अहमदुल्ला शाह (C) गोनू (D) कुँवर सिंह 1

उत्तर। (A) शाह मल, बरौंत परगना के।

CBSE 2024 · 61/2/1 1857 के विद्रोह से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को कालक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए और निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए : I. अवध में एकमुश्त बंदोबस्त II. अवध में सहायक संधि III. विलियम बेंटिंक की सुधारवादी नीतियाँ IV. आज़मगढ़ घोषणा। विकल्प : (A) II, III, I, IV (B) III, II, IV, I (C) I, III, IV, II (D) IV, I, II, III 1

उत्तर। (A) II, III, I, IV : अवध पर सहायक संधि (1801) → बेंटिंक के सुधार (1828–35) → संक्षिप्त बंदोबस्त (1856) → अज़मगढ़ घोषणा (25 अगस्त 1857)।

CBSE 2024 · 61/2/1 1857 के विद्रोह के नेताओं (सूची I) को उनके केन्द्रों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए और निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए : सूची I (नेता) : 1. नाना साहिब 2. कुँवर सिंह 3. वाजिद अली शाह 4. बिरजिस क़द्र; सूची II (केन्द्र) : (i) अवध (ii) कानपुर (iii) बिहार (iv) लखनऊ। विकल्प : (A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii), 4-(iv) (B) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i), 4-(iv) (C) 1-(iv), 2-(ii), 3-(iii), 4-(i) (D) 1-(i), 2-(iv), 3-(ii), 4-(iii) 1

उत्तर। (B)

CBSE 2024 · 61/3/1 स्तम्भ I का मिलान स्तम्भ II से कीजिए और निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए : स्तम्भ I (1857 के विद्रोह के नेता) : 1. कुँवर सिंह 2. शाह मल 3. बिरजिस क़द्र 4. गोनू; स्तम्भ II (संबंधित क्षेत्र) : (i) सिंहभूम (ii) आरा (iii) बड़ौत (iv) लखनऊ। विकल्प : (A) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii), 4-(iv) (B) 1-(iii), 2-(ii), 3-(iv), 4-(i) (C) 1-(ii), 2-(iii), 3-(iv), 4-(i) (D) 1-(iv), 2-(ii), 3-(iii), 4-(i) 1

उत्तर। (C)

CBSE 2024 · 61/4/1 निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सुमेलित है ? स्तंभ-I (क्षेत्र) – स्तंभ-II (1857 के विद्रोह के नेता) : (A) कानपुर – कुँवर सिंह (B) बिहार – गोनू (C) लखनऊ – बिरजिस क़द्र (D) सिंहभूम – नाना साहेब 1

उत्तर। (C) लखनऊ – बिरजिस क़द्र।

CBSE 2024 · 61/5/1 निम्नलिखित में से कौन बिहार क्षेत्र से 1857 के विद्रोह का नेता था ? (A) शाहमल (B) कुँवर सिंह (C) गुन्नू (D) नाना साहेब 1

उत्तर। (B) कुँवर सिंह, आरा (जगदीशपुर) के।

CBSE 2024 · 61/5/1 निम्नलिखित में से किसने अवध साम्राज्य के लिए नीचे दी गई पंक्ति का वर्णन किया ? "ये चेरी फल एक दिन हमारे ही मुँह में आकर गिरेगा।" (A) लॉर्ड कॉर्नवालिस (B) लॉर्ड वेलेजली (C) लॉर्ड डलहौज़ी (D) लॉर्ड कैनिंग 1

उत्तर। (C) लॉर्ड डलहौज़ी (1851)।

CBSE 2024 · 61/5/1 निम्नलिखित में से किस स्थान पर 10 मई, 1857 को विद्रोह शुरू हुआ ? (A) बैरकपुर (B) दिल्ली (C) मेरठ छावनी (D) लखनऊ 1

उत्तर। (C) मेरठ की छावनी।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक)

CBSE 2025 · 61/1/1 "1857 के विद्रोह को ऐसे युद्ध के रूप में देखा जा रहा था जिसमें हिंदुओं और मुसलमानों दोनों का नफ़ा-नुकसान बराबर था।" इस कथन का विश्लेषण कीजिए। 3

उत्तर। (1) विद्रोहियों के इश्तहारों ने समुदाय के भेद के बिना जनसंख्या के सभी वर्गों से अपील की। (2) उन्होंने मुग़ल साम्राज्य के अधीन हिंदू-मुस्लिम सह-अस्तित्व के ब्रिटिश-पूर्व अतीत का स्मरण किया; बहादुर शाह के अधीन घोषणा ने लोगों से मुहम्मद और महावीर दोनों के झंडों तले लड़ने का

आह्वान किया। (3) मुस्लिम राजकुमारों ने हिंदू भावनाओं का ध्यान रखा, और समुदायों में फूट डालने के ब्रिटिश प्रयास विफल रहे (जैसे बरेली, 1857); यह भय कि मिशनरी हिंदुओं और मुसलमानों दोनों का धर्मांतरण कर रहे हैं, उन्हें एकजुट करता था।

CBSE 2025 · 61/7/1 भारतीय चित्रण ने रानी लक्ष्मीबाई के 1857 के विद्रोह के योगदान को कैसे जीवित रखा ? स्पष्ट कीजिए। 3

उत्तर। (1) उसे लोकप्रिय चित्रों और छवियों में पुरुषों के सैन्य वस्त्रों में वीर आकृति के रूप में, एक हाथ में तलवार और दूसरे में लगाम लिए घोड़े पर सवार, अन्याय का प्रतिरोध करने के संकल्प के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है। (2) बीसवीं सदी की राष्ट्रवादी चित्रकला ने लोगों को प्रेरित करने के लिए ऐसे चित्र प्रयोग किए। (3) कविताएँ (सुभद्राकुमारी चौहान की "ख़ूब लड़ी मर्दानी..."), लोकगीत, मूर्तियाँ और उपन्यास उसकी स्मृति को साहस और ब्रिटिश शासन के प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में जीवित रखते हैं।

CBSE 2026 · 61/2/1 (क) 1857 के विद्रोह के पहले दिन (10 मई) को मेरठ में घटित घटनाओं की व्याख्या कीजिए। **अथवा** (ख) 1857 के विद्रोह के 11 मई को दिल्ली के लाल किले में घटित घटनाओं की व्याख्या कीजिए। 3

उत्तर। **(a)** (1) 10 मई 1857 की दोपहर को मेरठ छावनी के सिपाहियों ने बग़ावत कर दी, जो नेटिव इन्फ़ैंट्री से आरंभ होकर घुड़सवार सेना और फिर नगर में फैल गई। (2) नगर और आसपास के गाँवों के आम लोग साथ आए; सिपाहियों ने शस्त्रागार (बेल ऑफ़ आर्म्स) पर क़ब्ज़ा किया, गोरे अधिकारियों और उनके परिवारों पर हमला करके उन्हें मारा, और बँगलों तथा अभिलेखों में आग लगा दी। (3) उन्होंने रिकॉर्ड ऑफ़िस, जेल, अदालत, डाकघर और ख़ज़ाने पर हमला किया और दिल्ली जाने वाली टेलीग्राफ़ लाइन काट दी; रात होते-होते सिपाहियों का एक दल दिल्ली की ओर चल पड़ा।
(b) (1) 11 मई की भोर में मेरठ के सिपाही लाल क़िले के द्वार पर पहुँचे और मुग़ल सम्राट बहादुर शाह से मिलने की माँग की। (2) सम्राट आरंभ में तैयार नहीं थे, पर कुछ सिपाही महल में घुस गए; इसी बीच दिल्ली में यूरोपीय मारे गए और दिल्ली के धनी लोगों पर हमले और लूट हुई। (3) बहादुर शाह, जिनके पास बहुत कम विकल्प था, विद्रोह के नाममात्र के नेता बनने को सहमत हुए, जिससे उसे वैधता मिली; विद्रोह फिर पूरे उत्तर भारत में फैल गया।

CBSE 2026 · 61/3/1 भारतीय कला और साहित्य ने 1857 के विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में किस प्रकार चित्रित किया ? स्पष्ट कीजिए। 3

उत्तर। (1) बीसवीं सदी के राष्ट्रवादियों ने विद्रोह से प्रेरणा ली; वी.डी. सावरकर ने इसे "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" कहा, जिसमें सभी वर्गों ने साम्राज्यवादी शासन के विरुद्ध मिलकर लड़ाई लड़ी। (2) रानी लक्ष्मीबाई जैसे नेताओं को चित्रों, कविताओं (सुभद्राकुमारी चौहान) और कहानियों में वीर आकृतियों के रूप में दर्शाया गया; उसे पुरुषों के वस्त्रों में, तलवार लिए घोड़े पर सवार दिखाया गया। (3) ऐसी कला और साहित्य ने विद्रोह की स्मृति जीवित रखी और साझा संघर्ष की भावना बनाई, जिसका प्रयोग बाद के आंदोलनों को प्रेरित करने के लिए हुआ।

CBSE 2024 · 61/1/1 (क) 1857 का विद्रोह विशेष रूप से अवध में क्यों फैला ? स्पष्ट कीजिए। **अथवा** (ख) 1857 में विद्रोहियों द्वारा जारी की गई घोषणाएँ समाज के सभी तबकों से एकता का आह्वान क्यों कर रही थीं ? स्पष्ट कीजिए। 3

उत्तर। **(a)** (1) अवध का 1856 में कुशासन के आधार पर विलय हुआ और लोकप्रिय नवाब वाजिद अली शाह को कलकत्ता निर्वासित किया गया, जिससे भावनात्मक उथल-पुथल हुई; अनेक ने आजीविका खो दी (संगीतकार, नर्तक, कवि, रसोइए, सेवक, अधिकारी)। (1क) अवध की उपजाऊ भूमि नील और कपास की खेती के लिए उपयुक्त थी, और सहायक संधि तथा अंग्रेज़ों की राज्य-विलय नीति से भी असंतोष बढ़ा था। (2) संक्षिप्त बंदोबस्त (1856) ने ताल्लुक़दारों को उनकी भूमि, क़िलों और सेनाओं से बेदख़ल किया; किसानों की स्थिति भी बेहतर नहीं थी क्योंकि राजस्व माँग ऊँची थी। (3) बंगाल सेना के अधिकतर सिपाही अवध के गाँवों से आते थे ("बंगाल सेना की पौधशाला"); वेतन, भत्तों पर उनकी शिकायतों और जाति खोने के भय ने उन्हें किसानों से जोड़ा, इसलिए विद्रोह

जन-विद्रोह बन गया।

(b) (1) विद्रोही चाहते थे कि जाति और धर्म के भेद के बिना सभी वर्ग साझा शत्रु, अंग्रेज़ों, के विरुद्ध उठ खड़े हों। (2) घोषणाओं ने मुग़लों के अधीन हिंदू-मुस्लिम सह-अस्तित्व के ब्रिटिश-पूर्व अतीत का स्मरण किया और लोगों को मुहम्मद और महावीर दोनों के झंडों तले लड़ने का आह्वान किया। (3) आज़मगढ़ उद्घोषणा (25 अगस्त 1857) के अनुसार जनता की कुशलक्षेम के लिए धर्मरक्षकों और स्वामियों को आगे आना चाहिए था; बरेली में अंग्रेज़ों ने हिंदुओं और मुसलमानों को उकसाने का प्रयास किया जो असफल रहा। (4) ब्रिटिश शासन सबके धर्म, जाति, संपत्ति और आजीविका (ज़मींदार, व्यापारी, शिल्पकार, किसान) के लिए ख़तरा माना गया, इसलिए संयुक्त मोर्चा आवश्यक था।

CBSE 2024 · 61/2/1 1857 के विद्रोह के बारे में जानने के किन्हीं तीन स्रोतों का वर्णन कीजिए। 3

उत्तर। (1) **विद्रोहियों के स्रोत** : विद्रोही नेताओं और सिपाहियों की घोषणाएँ, इश्तहार और अर्ज़ियाँ (याचिकाएँ), यद्यपि कम बची हैं। (2) **ब्रिटिश सरकारी अभिलेख** : ब्रिटिश अधिकारियों के पत्र, डायरियाँ, आत्मकथाएँ और रिपोर्टें, जो उनके भय और पूर्वाग्रहों को प्रतिबिंबित करती हैं। (3) **चित्र-स्रोत** : अंग्रेज़ों और भारतीयों दोनों द्वारा बनाई चित्रकारियाँ, पेंसिल रेखाचित्र, नक़्क़ाशियाँ, पोस्टर, कार्टून और बाज़ार-छपाइयाँ (जैसे थॉमस जोन्स बार्कर का "रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ", जोसेफ़ नोएल पैटन का "इन मेमोरियम"; रानी लक्ष्मीबाई के राष्ट्रवादी चित्र), और समाचार-पत्र।

CBSE 2024 · 61/4/1 (क) 1857 के दौरान अफवाहों ने लोगों को अंग्रेज़ों के खिलाफ विद्रोह करने के लिए किस प्रकार प्रेरित किया ? स्पष्ट कीजिए। **अथवा** (ख) अंग्रेज़ अवध का अधिग्रहण करने के लिए उत्सुक क्यों थे ? स्पष्ट कीजिए। 3

उत्तर। **(a)** (1) यह अफ़वाह कि नई एनफ़ील्ड राइफ़लों के कारतूस गाय और सूअर की चर्बी से चिकने किए गए हैं, और उन्हें दाँत से काटने से जाति और धर्म भ्रष्ट होंगे, सिपाहियों में फैली (जैसे दमदम और बैरकपुर में); ब्रिटिश स्पष्टीकरणों पर विश्वास नहीं किया गया। (2) अफ़वाहें फैलीं कि अंग्रेज़ों ने बाज़ार में बिकने वाले आटे में गाय और सूअर की हड्डियों का चूर्ण मिला दिया है, और वे हिंदुओं तथा मुसलमानों का ईसाई धर्म में धर्मांतरण करने पर तुले हैं; नगरों और छावनियों ने आटा छूने से इनकार कर दिया। (3) पूरे उत्तर भारत में चपातियाँ बाँटी गईं, जिसे भय और संदेह के प्रसार का संकेत माना गया। (4) भविष्यवाणियाँ भी फैलीं कि ब्रिटिश शासन प्लासी के युद्ध की शताब्दी (23 जून 1857) पर समाप्त हो जाएगा; अफ़वाहों पर इसलिए विश्वास किया गया क्योंकि वे ब्रिटिश नीतियों (सुधार, विलय, मिशनरी गतिविधि, राजस्व बंदोबस्त) से उपजे गहरे भय को दर्शाती थीं।

(b) (1) डलहौज़ी ने अवध को "एक चेरी जो एक दिन हमारे मुँह में आ गिरेगी" बताया; सहायक संधि (1801) ने नवाब की शक्ति पहले ही घटा दी थी। (2) अंग्रेज़ अवध की उपजाऊ मिट्टी, जो नील और कपास उगाने के लिए अच्छी थी, चाहते थे और उसे ब्रिटिश माल के बड़े बाज़ार के रूप में देखते थे। (3) 1850 तक उन्होंने अधिकतर भारत जीत लिया था; अवध का विलय (1856, कुशासन के आधार पर) साम्राज्य के क्षेत्रीय विस्तार की पूर्णता था।

CBSE 2024 · 61/5/1 (क) बहादुरशाह ज़फ़र ने 1857 के विद्रोहियों को किन परिस्थितियों में अपना आशीर्वाद दिया ? स्पष्ट कीजिए। **अथवा** (ख) 1857 के विद्रोह को जानने के किन्हीं तीन स्रोतों को स्पष्ट कीजिए। 3

उत्तर। **(a)** (1) 11 मई 1857 को मेरठ के सिपाही लाल क़िले पहुँचे; रमज़ान था और वृद्ध सम्राट प्रार्थना कर चुके थे। (2) सिपाहियों ने कहा कि वे मेरठ में अंग्रेज़ों को मारकर आए हैं क्योंकि गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूस हिंदुओं और मुसलमानों की आस्था भ्रष्ट करते थे; एक अन्य दल दिल्ली में घुसा और आम लोग साथ आए; यूरोपीय मारे गए और दिल्ली ब्रिटिश नियंत्रण से बाहर हो गई। (3) कुछ सिपाही दरबार के शिष्टाचार का पालन किए बिना क़िले में घुस आए और उनसे आशीर्वाद माँगा; घिरे होने पर उनके पास मानने के सिवा कोई विकल्प नहीं था, और उनके नाम पर विद्रोह को वैधता मिली।

(b) 1857 के विद्रोह के स्रोतों पर ऊपर दिया उत्तर देखिए (विद्रोहियों की घोषणाएँ, इश्तहार और अर्ज़ियाँ; ब्रिटिश सरकारी अभिलेख, पत्र और डायरियाँ; चित्र और समाचार-पत्र)।

स्रोत-आधारित प्रश्न (4 अंक)

CBSE 2025 · 61/4/1 स्रोत : "मौलवी अहमदुल्ला शाह" — मौलवी अहमदुल्ला शाह 1857 के विद्रोह में अहम भूमिका निभाने वाले बहुत सारे मौलवियों में से एक थे। हैदराबाद में शिक्षित शाह काफ़ी कम उम्र में ही उपदेशक बन गए थे। 1856 में उन्हें अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जिहाद का प्रचार करते और लोगों को विद्रोह के लिए तैयार करते हुए गाँव-गाँव जाते देखा गया था। वे एक पालकी में बैठकर चलते थे। पालकी के आगे-आगे ढोल और पीछे उनके समर्थक होते थे। इसीलिए उन्हें लोग-बाग डंका शाह कहने लगे थे। ब्रिटिश अफ़सर इस बात से परेशान थे कि मौलवी के साथ हज़ारों लोग जुट रहे थे और बहुत सारे मुसलमान उन्हें पैगम्बर मानने लगे थे और समझते थे कि वह इस्लाम के आदर्शों से ओतप्रोत हैं। जब 1856 में वे लखनऊ पहुँचे तो पुलिस ने उन्हें शहर में उपदेश देने से रोक दिया। 1857 में उन्हें फ़ैज़ाबाद जेल में बंद कर दिया गया। रिहा होने पर उन्हें 22वीं नेटिव इन्फेंट्री के विद्रोहियों ने अपना नेता चुन लिया। उन्होंने चिनहाट के विख्यात संघर्ष में हिस्सा लिया जिसमें हेनरी लॉरेंस की अगुवाई वाली अंग्रेज़ टुकड़ियों को मुँह की खानी पड़ी। मौलवी साहब को उनकी बहादुरी और ताकत के लिए जाना जाता था। बहुत सारे लोग मानते थे कि उनको कोई नहीं हरा सकता; उनके पास जादुई शक्तियाँ हैं और अंग्रेज़ उनका बाल भी बाँका नहीं कर सकते हैं। काफ़ी हद तक इसी विश्वास के कारण उन्हें लोगों में इतना अधिकार प्राप्त था।

33.1 मौलवी अहमदुल्ला शाह को 'डंका शाह' क्यों कहा जाता था ? (1) 33.2 मौलवी अहमदुल्ला शाह के बढ़ते प्रभाव पर ब्रिटिश अधिकारियों की क्या प्रतिक्रिया थी ? (1) 33.3 मौलवी अहमदुल्ला शाह के कार्य किस हद तक भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिरोध को दर्शाते थे ? (2) 4

उत्तर। 33.1 वे अपनी पालकी के आगे नगाड़े (डंका) बजाने वालों के साथ चलते थे।

33.2 अंग्रेज़ अधिकारी घबरा गए, क्योंकि हज़ारों लोग मौलवी का अनुसरण करने लगे थे और कई मुसलमान उन्हें प्रेरित पैगंबर मानते थे; पुलिस ने उन्हें लखनऊ में उपदेश देने से रोका और फ़ैज़ाबाद में जेल में डाल दिया।

33.3 (i) उन्होंने धार्मिक अपील से हज़ारों को संगठित किया और विद्रोही सिपाहियों ने उन्हें नेता चुना, जो लोकप्रिय और सैन्य विद्रोह को जोड़ता है। (ii) उन्होंने चिनहट में अंग्रेज़ों को हराया; उनके अजेय होने का विश्वास दिखाता है कि धार्मिक नेताओं ने विद्रोह को अधिकार और जन-समर्थन कैसे दिया।

SAMPLE : notesbazar.in

CBSE 2025 · 61/S/1 स्रोत : "1857 के दो विद्रोही : शाह मल" — शाह मल उत्तर प्रदेश के बड़ौत परगना के एक बड़े गाँव के रहने वाले थे। वह एक जाट कुटुम्ब से संबंध रखते थे जो चौरासी देस (चौरासी गाँव) में फैला हुआ था। इस इलाके की ज़मीन सिंचाई की सुविधाओं से लैस और उपजाऊ थी। यहाँ कि मिट्टी काली नम थी। बहुत सारे ग्रामीण संपन्न थे और लोग ब्रिटिश भूराजस्व व्यवस्था को दमनकारी मानते थे : लगान की दर ज़्यादा और वसूली सख़्त थी। नतीजा यह था कि किसानों की ज़मीन बाहरी लोगों के हाथ में जा रही थी। इलाक़े में आने वाले व्यापारी और महाजन ज़मीन पर क़ब्ज़ा करते जा रहे थे। शाह मल ने चौरासी देस के मुखियाओं और काश्तकारों को संगठित किया। इसके लिए उन्होंने रात के साए में गाँव-गाँव जाकर बात की और लोगों को अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ विद्रोह के लिए तैयार किया। बहुत सारे दूसरे स्थानों की तरह यहाँ भी अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ आंदोलन एक व्यापक विद्रोह में तब्दील हो गया। अब विरोध उत्पीड़न और अन्याय के तमाम चिह्नों के ख़िलाफ़ होने लगा। किसान अपने खेत छोड़कर निकल पड़े और महाजनों व व्यापारियों के घर-बार लूटने लगे। बेदख़ल भूस्वामियों ने छिन चुकी ज़मीनों पर दोबारा क़ब्ज़ा कर लिया। शाह मल के आदमियों ने सरकारी इमारतों पर हमला किया, नदी का पुल ध्वस्त कर दिया और पक्की सड़कों को खोद डाला। इसकी एक वजह यह थी कि वे सरकारी फ़ौजों का रास्ता रोकना चाहते थे। दूसरी वजह यह थी कि पुलों और सड़कों को ब्रिटिश शासन का प्रतीक माना जाता था। उन्होंने दिल्ली में विद्रोह करने वाले सिपाहियों को रसद पहुँचाई और ब्रिटिश हेडक्वार्टर व मेरठ के बीच तमाम सरकारी संचार बंद कर दिया। स्थानीय स्तर पर राजा कहलाने वाले शाह मल ने एक अंग्रेज़ अफ़सर के बंगले में डेरा डाला, उसे "न्याय भवन" का नाम दिया और वहीं से झगड़ों और विवादों का फ़ैसला करने लगे। उन्होंने गुप्तचरी का भी हैरतअंगेज़ नेटवर्क स्थापित कर लिया था। कुछ समय के लिए लोगों को लगा कि फ़िरंगी राज ख़त्म हो चुका है और उनका राज आ गया है। जुलाई 1857 में शाह मल को युद्ध में मार दिया गया।

33.1 शाह मल के नेतृत्व ने विद्रोह के प्रसार में कैसे योगदान दिया ? (1) 33.2 शाह मल के नेतृत्व में विद्रोह ने अंग्रेज़ी सत्ता को किस प्रकार चुनौती दी ? (1) 33.3 शाह मल द्वारा 'न्याय भवन' की स्थापना उनके शासन के दृष्टिकोण को कैसे दर्शाती है ? (2) 4

उत्तर। 33.1 उन्होंने 84 गाँवों के मुखियाओं और कृषकों को संगठित किया, रात में गाँव-गाँव जाकर उनसे विद्रोह का आग्रह करते हुए।

33.2 उनके लोगों ने सरकारी इमारतों पर हमला किया, पुल और सड़कें (ब्रिटिश शासन के प्रतीक) नष्ट कीं, दिल्ली के सिपाहियों को आपूर्ति दी और ब्रिटिश मुख्यालय तथा मेरठ के बीच संचार काट दिया।

33.3 (i) उन्होंने एक अंग्रेज़ अधिकारी के बंगले पर क़ब्ज़ा करके उसे "न्याय भवन" बना दिया और एक वैकल्पिक सत्ता स्थापित की जो विवाद निपटाती और न्याय देती थी, जो दिखाता है कि विद्रोही ब्रिटिश शासन के स्थान पर अपना शासन चाहते थे। (ii) यह एक न्यायपूर्ण, स्थानीय, सुलभ शासन को दर्शाता था; लोगों को लगा कि "फ़िरंगी राज समाप्त हो गया और उनका राज आ गया"।

CBSE 2025 · 61/6/1 स्रोत : "ताल्लुक़दारों की सोच" — ताल्लुक़दारों के रवैये को रायबरेली के पास स्थित कालाकंकर के राजा हनवन्त सिंह ने सबसे अच्छी तरह व्यक्त किया था। विद्रोह के दौरान हनवन्त सिंह ने एक अंग्रेज़ अफ़सर को पनाह दी और उसे सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया था। उस अफ़सर से आख़िरी मुलाक़ात में हनवन्त सिंह ने कहा कि साहिब, आपके मुल्क के लोग हमारे देश में आए और उन्होंने हमारे राजाओं को खदेड़ दिया। आप अफ़सरों को भेज कर जिले-जिले में जागीरों के मालिकाने की जाँच करवाते हैं। एक ही झटके में आपने मेरे पुरखों की ज़मीन मुझसे छीन ली। मैं चुप रहा। फिर अचानक आपका बुरा वक़्त शुरू हो गया। भूमि के लोग आपके ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए। तब आप मेरे पास आए, जिसे आपने बर्बाद किया था। मैंने आपकी जान बचाई है। लेकिन अब, अब मैं अपने सिपाहियों को लेकर लखनऊ जा रहा हूँ ताकि आपको देश से खदेड़ सकूँ।
33.1 हनवन्त सिंह ने अंग्रेज़ों के प्रति अपना असंतोष कैसे व्यक्त किया ? (1) 33.2 हनवन्त सिंह ने 'भूमि के लोग' किसे कहा ? (1) 33.3 हनवन्त सिंह का कथन ताल्लुक़दारों की भावनाओं को कैसे दर्शाता है ? (2) 4

उत्तर। 33.1 उसने शिकायत की कि अंग्रेज़ों ने अवध के राजा को खदेड़ दिया और भूमि-बंदोबस्त के द्वारा एक ही झटके में उसकी पुरखों की भूमि छीन ली।
33.2 क्षेत्र के स्थानीय नागरिक/मूल निवासी, अर्थात् अवध के आम लोग (किसान और सिपाही) जो ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह में उठ खड़े हुए।
33.3 (i) ताल्लुक़दारों ने 1856 के संक्षिप्त बंदोबस्त में जागीरें, क़िले और सशस्त्र अनुचर खोए, जिसने उन्हें हटाकर राजस्व सीधे किसानों से तय किया, इसलिए वे अपनी शक्ति और प्रस्थिति वापस पाने के लिए विद्रोह में शामिल हुए। (ii) पदच्युत नवाब के प्रति उनकी निष्ठा और आहत सम्मान दिखाता है कि अवध के विलय ने एक पूरी सामाजिक व्यवस्था को तोड़ दिया।

CBSE 2026 · 61/1/1 स्रोत : "ताल्लुक़दारों की सोच" — ताल्लुक़दारों के रवैये को रायबरेली के पास स्थित कालाकंकर के राजा हनवन्त सिंह ने सबसे अच्छी तरह व्यक्त किया। विद्रोह के दौरान हनवन्त सिंह ने एक अंग्रेज़ अफ़सर को पनाह दी और उसे सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया था। उस अफ़सर से आख़िरी मुलाक़ात में हनवन्त सिंह ने कहा कि : साहिब, आपके मुल्क के लोग हमारे देश में आए और उन्होंने हमारे राजाओं को खदेड़ दिया। आप अफ़सरों को भेज कर जिले-जिले में जागीरों के मालिकाने की जाँच करवाते हैं। एक ही झटके में आपने मेरे पुरखों की ज़मीन मुझसे छीन ली। मैं चुप रहा। फिर अचानक आपका बुरा वक़्त शुरू हो गया। यहाँ के लोग आपके ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए। तब आप मेरे पास आए, जिसे आपने बर्बाद किया था। मैंने आप की जान बचाई है। लेकिन अब, अब मैं अपने सिपाहियों को लेकर लखनऊ जा रहा हूँ ताकि आपको देश से खदेड़ सकूँ।
33.1 ब्रिटिश अफ़सर के प्रति हनवन्त सिंह की पीड़ा को स्पष्ट कीजिए। (1) 33.2 शासकों द्वारा ताल्लुकदारों को किस प्रकार की सुविधाएँ दी जाती थी ? (1) 33.3 ब्रिटिश शासन से ताल्लुकदारों के असंतोष के किन्हीं दो कारणों की व्याख्या कीजिए। (2) 4

उत्तर। 33.1 अंग्रेज़ों ने अवध के राजा को खदेड़ दिया था और एक ही झटके में उसकी पुरखों की भूमि ले ली थी।
33.2 नवाबों के अधीन ताल्लुक़दार जागीरें और क़िले रखते, सशस्त्र अनुचर रखते और जब तक नवाब की अधीनता स्वीकार करते और राजस्व चुकाते स्वायत्तता भोगते थे।
33.3 (i) विलय (1856) के बाद अंग्रेज़ों ने उनकी सेनाएँ भंग कीं और क़िले ध्वस्त किए। (ii) 1856 के संक्षिप्त बंदोबस्त ने जहाँ संभव हुआ ताल्लुक़दारों को हटाया और राजस्व सीधे किसानों से तय किया, इसलिए उन्होंने भूमि, शक्ति और सम्मान खोया (अवध में उनका गाँवों का हिस्सा 67% से घटकर 38% रह गया)।

CBSE 2026 · 61/4/1 स्रोत : "सिपाही क्या सोचते थे" — विद्रोही सिपाहियों की एक अर्ज़ी जो बच गई : एक सदी पहले अंग्रेज़ हिंदुस्तान आए और धीरे-धीरे यहाँ फ़ौजी टुकड़ियाँ बनाने लगे। इसके बाद वे हर राज्य के मालिक बन बैठे। हमारे पुरखों ने सदा उनकी सेवा की है और हम भी उनकी नौकरी में आए ... । ईश्वर की कृपा से और हमारी सहायता से अंग्रेज़ों ने जो चाहा वो इलाका जीत लिया। उनके लिए हमारे जैसे हज़ारों हिंदुस्तानी जवानों को अपनी कुर्बानी देनी पड़ी लेकिन न हमने कभी पैर पीछे खींचे और न कोई बहाना बनाया और न ही कभी बग़ावत के रास्ते पर चले ... । लेकिन सन् 1857 में अंग्रेज़ों ने ये हुक्म जारी कर दिया कि अब सिपाहियों को इंग्लैंड से नए कारतूस और बंदूकें दी जाएँगी। नए कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी मिली हुई है और गेहूँ के आटे में हड्डियों का चूरा मिलाकर खिलाया जा रहा है। ये चीज़ें पैदल-सेना, घुड़सवारों और गोलंदाज़ फ़ौज की हर रेजीमेंट में पहुँचा दी गई हैं ... । उन्होंने ये कारतूस थर्ड लाइट केवेलरी के सवारों (घुड़सवार सैनिक) को दिए और उन्हें दाँतों से खींचने के लिए कहा। सिपाहियों ने इस हुक्म का विरोध किया और कहा कि वे ऐसा कभी नहीं करेंगे, क्योंकि अगर उन्होंने ऐसा किया तो उनका धर्म भ्रष्ट हो जाएगा ... । इस पर अंग्रेज़ अफ़सरों ने तीन रेजीमेंटों के जवानों की परेड करवा दी। 1400 अंग्रेज़ सिपाही, यूरोपीय सैनिकों की दूसरी बटालियनें, और घुड़सवार गोलंदाज़ फ़ौज को तैयार कर भारतीय सैनिकों को घेर लिया गया। हर पैदल रेजीमेंट के सामने छर्रों से भरी छह-छह तोपें तैनात कर दी गईं और 85 नए सिपाहियों को गिरफ़्तार करके, बेड़ियाँ डालकर, जेल में बंद कर दिया गया। छावनी के सवारों को इसलिए जेल में डाला गया ताकि हम डर कर नए कारतूसों को दाँतों से खींचने लगें। इसी कारण हम और हमारे सारे सहोदर इकट्ठा होकर अपनी आस्था की रक्षा के लिए अंग्रेज़ों से लड़े ... । हमें दो साल तक युद्ध जारी रखने पर मजबूर किया गया। धर्म व आस्था के सवाल पर हमारे साथ खड़े राजा और मुखिया अभी भी हमारे साथ हैं और उन्होंने भी सारी मुसीबतें झेली हैं। हम दो साल तक इसलिए लड़े ताकि हमारा अक़ायद (आस्था) और मज़हब दूषित न हों। अगर एक हिंदू या मुसलमान का धर्म ही नष्ट हो गया तो दुनिया में बचेगा क्या ?

33.1 सिपाहियों ने 'अर्ज़ी' में अपने विद्रोह को कैसे उचित ठहराया ? (1) 33.2 अंग्रेज़ों ने नए कारतूसों को कैसे प्रस्तुत किया ? (1) 33.3 सिपाहियों और भारतीय मुखियाओं ने साथ मिलकर कार्य क्यों किया ? (2) 4

> **उत्तर।** 33.1 अपने धर्म और आस्था की रक्षा की लड़ाई के रूप में, जिसे अंग्रेज़ दूषित कारतूसों और आटे के द्वारा नष्ट करने का प्रयास कर रहे थे।
> 33.2 उन्हें हर रेजिमेंट को दिया गया, उन्हें काटने के आदेश के साथ; जब 3rd लाइट कैवलरी ने इनकार किया तो दूसरों को डराने के लिए सवारों को बेड़ियों में जेल में डाल दिया गया।
> 33.3 (i) हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को धर्म और जाति खोने का भय था; साझा ख़तरे ने उन्हें एकजुट किया। (ii) राजा और सरदार जो उनकी आस्था साझा करते थे और जिनकी ब्रिटिश शासन से अपनी शिकायतें थीं, साथ आए, जिससे विद्रोह को नेतृत्व और शक्ति मिली।

CBSE 2026 · 61/S/1 *स्रोत : "1857 का आंदोलन" — 10 मई 1857 की दोपहर बाद मेरठ छावनी में सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। हलचल की शुरुआत भारतीय सैनिकों से बनी पैदल सेना से हुई थी जो जल्द ही घुड़सवार फ़ौज और फिर शहर तक फैल गई। शहर और आसपास के देहात के लोग सिपाहियों के साथ जुड़ गए। सिपाहियों ने शस्त्रागार पर क़ब्ज़ा कर लिया जहाँ हथियार और गोला-बारूद रखे हुए थे। इसके बाद उन्होंने गोरों पर निशाना साधा और उनके बंगलों, साजो-सामान को तहस-नहस करना और जलाना-फूँकना शुरू कर दिया। रिकॉर्ड दफ़्तर, जेल, अदालत, डाकखाने, सरकारी खजाने, जैसी सरकारी इमारतों को लूटकर तबाह किया जाने लगा। शहर को दिल्ली से जोड़ने वाली टेलीग्राफ़ लाइन काट दी गई। अँधेरा पसरते ही सिपाहियों का एक जत्था घोड़ों पर सवार होकर दिल्ली की तरफ़ चल पड़ा। यह जत्था 11 मई को तड़के लाल क़िले के फाटक पर पहुँचा। रमज़ान का महीना था। मुग़ल सम्राट बहादुर शाह नमाज़ पढ़कर और सहरी (रोज़े के दिनों में सूरज उगने से पहले का भोजन) खाकर उठे थे। उन्हें फाटक पर हो-हल्ला सुनाई दिया। बाहर खड़े सिपाहियों ने जानकारी दी कि "हम मेरठ के सभी अंग्रेज़ पुरुषों को मारकर आए हैं क्योंकि वे हमें गाय और सुअर की चर्बी में लिपटे कारतूस दाँतों से खींचने के लिए मजबूर कर रहे थे। इससे हिंदू और मुसलमान, सबका धर्म भ्रष्ट हो जाएगा।" तब तक सिपाहियों का एक और जत्था दिल्ली में दाख़िल हो चुका था और शहर के आम लोग उनके साथ जुड़ने लगे थे। बहुत सारे यूरोपियन लोग मारे गए, दिल्ली के अमीर लोगों पर हमले हुए और लूटपाट हुई। दिल्ली अंग्रेज़ों के नियंत्रण से बाहर जा चुकी थी। कुछ सिपाही लाल क़िले में दाख़िल होने के लिए दरबार के शिष्टाचार का पालन किए बिना बेधड़क क़िले में घुस गए थे। उनकी माँग थी कि बादशाह उन्हें अपना आशीर्वाद दें। सिपाहियों से घिरे बहादुर शाह के पास उनकी बात मानने के अलावा और कोई चारा न था। इस तरह इस विद्रोह ने एक वैधता हासिल कर ली क्योंकि अब उसे मुग़ल बादशाह के नाम पर चलाया जा सकता था।*

33.1 विद्रोहियों के लिए बहादुर शाह की भागीदारी क्यों महत्त्वपूर्ण थी ? (1) 33.2 दिल्ली में विद्रोहियों की कार्रवाइयों से ब्रिटिश नियंत्रण के टूटने का पता कैसे चलता है ? (1) 33.3 इस विद्रोह में सिपाहियों और धार्मिक भावनाओं ने किस प्रकार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई ? स्पष्ट कीजिए। (2) 4

> **उत्तर।** *33.1 इससे विद्रोह को वैधता मिली, क्योंकि उसे मुग़ल सम्राट, जो पूरे उत्तर भारत में सत्ता का प्रतीक था, के नाम पर चलाया जा सकता था।*
>
> *33.2 यूरोपीय बड़ी संख्या में मारे गए, धनी लोग लूटे गए, और नगर सिपाहियों तथा लोगों के हाथ में चला गया : दिल्ली ब्रिटिश नियंत्रण से बाहर हो गई थी।*
>
> *33.3 (i) सिपाहियों ने विद्रोह आरंभ किया और दिल्ली के कूच का नेतृत्व किया, ब्रिटिश शासन के प्रतीकों को निशाना बनाते हुए। (ii) यह भय कि चिकने कारतूस हिंदुओं और मुसलमानों दोनों की आस्था भ्रष्ट करेंगे, उन्हें एकजुट करता और आम लोगों को विद्रोह में खींच लाता था।*

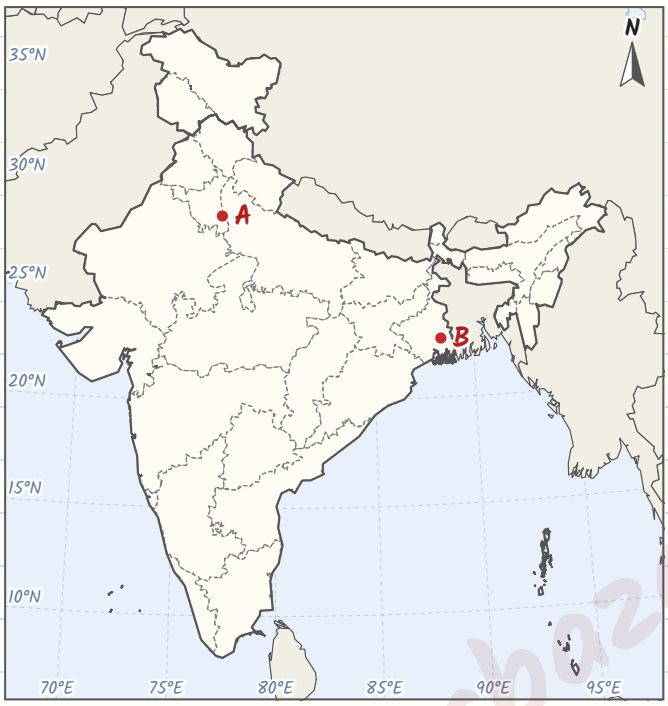
CBSE 2024 · 61/3/1 *स्रोत : "नवाब साहब जा चुके हैं" — एक और गीत में ऐसे शासक की दुर्दशा पर विलाप किया जा रहा है जिसे मजबूरन अपनी मातृभूमि छोड़नी पड़ी : अभिजात और किसान, सब रो रहे थे। और सारा आलम रोता-चिल्लाता था। हाय! जान-ए-आलम देस से विदा लेकर परदेस चले गए हैं।*

33.1 नवाब को हटाने का तत्काल प्रभाव क्या पड़ा ? (1) 33.2 नवाब के गद्दी से हटने और जाने पर भावनात्मक उथल-पुथल क्यों मची ? (1) 33.3 अवध का अधिग्रहण अंग्रेज़ों की औपनिवेशिक रणनीति में किस प्रकार सही रहा ? स्पष्ट कीजिए। (2) 4

> **उत्तर।** *33.1 सभी वर्गों के लोगों ने शोक मनाया; अनेक (संगीतकार, नर्तक, कवि, रसोइए, सेवक, अधिकारी) ने आजीविका खो दी, और पूरा समाज अस्त-व्यस्त हो गया।*
>
> *33.2 नवाब वाजिद अली शाह लोकप्रिय और व्यापक रूप से प्रिय थे; उनके हटाए जाने (कलकत्ता निर्वासन) को अपमान और एक सांस्कृतिक जगत की हानि के रूप में देखा गया।*
>
> *33.3 (i) लॉर्ड डलहौज़ी ने 1856 में कुशासन के बहाने अवध का विलय किया, जो विस्तार की नीति (सहायक संधि, व्यपगत का सिद्धांत) का हिस्सा था। (ii) अंग्रेज़ अवध की उपजाऊ मिट्टी (नील और कपास के लिए अच्छी) और ब्रिटिश माल के बाज़ार के रूप में उसकी स्थिति चाहते थे ("चेरी का रत्न")।*

मानचित्र प्रश्न

CBSE 2025 · 61/1/1; CBSE 2025 · 61/4/1 दिए गए भारत के इसी राजनीतिक रेखा-मानचित्र पर 1857 के विद्रोह से संबंधित दो केंद्रों को A और B से अंकित किया गया है। इनको पहचानिए और उनके साथ खींची गई रेखाओं पर इनके सही नाम लिखिए।

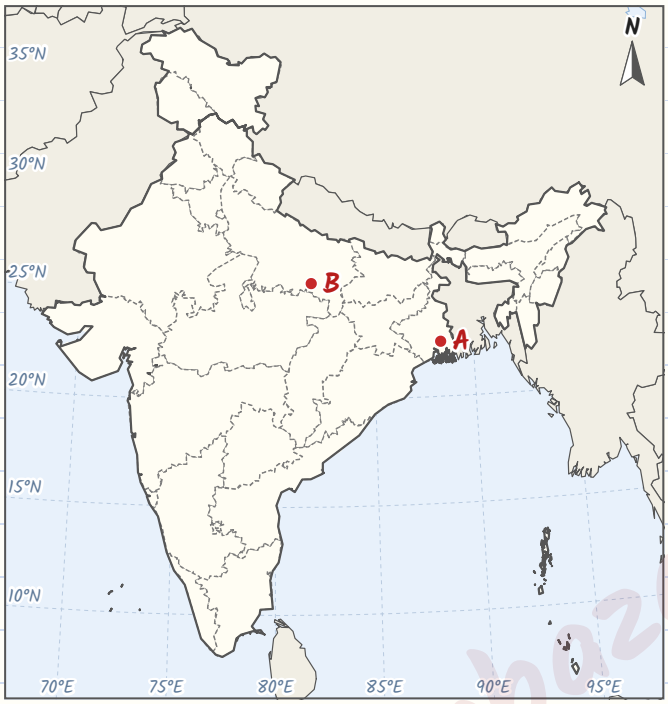


मानचित्र जैसा CBSE 2025 (61/1/1 और 61/4/1) में : A और B उन्हीं स्थानों पर अंकित जहाँ प्रश्न-पत्र में हैं

उत्तर। A = **दिल्ली**; B = **बैरकपुर** (कलकत्ता के निकट)। अन्य केंद्र : मेरठ, लखनऊ, कानपुर, झाँसी, आरा, ग्वालियर, बरेली, अवध। 2

SAMPLE · notesbazar.in

CBSE 2025 · 61/6/1 भारत के इसी राजनीतिक रेखा-मानचित्र पर 1857 के दौरान ब्रिटिश नियंत्रण के अधीन दो स्थानों को A और B से अंकित किया गया है। इनकी पहचान कीजिए और उनके सही नाम उनके निकट खींची गई रेखाओं पर लिखिए। (दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए : दो स्थानों के नाम बताइए जो 1857 के दौरान ब्रिटिश के नियंत्रण में थे।)



मानचित्र जैसा CBSE 2025 (61/6/1) में : A और B उन्हीं स्थानों पर अंकित जहाँ प्रश्न-पत्र में हैं

उत्तर। A = **कलकत्ता** (अंक-योजना बैरकपुर भी स्वीकार करती है, जो कलकत्ता के बगल में है); B[2] = **इलाहाबाद**। ब्रिटिश नियंत्रण में अन्य : बंबई, मद्रास, सूरत, आगरा, पटना।

CBSE 2024 · 61/3/1 भारत के इसी राजनीतिक रेखा-मानचित्र पर दो स्थानों को A और B के रूप में चिह्नित किया गया है जो 1857 के दौरान ब्रिटिश के अधीनस्थ थे। उन्हें पहचानिए और उनके निकट खींची गई रेखाओं पर सही नाम लिखिए।



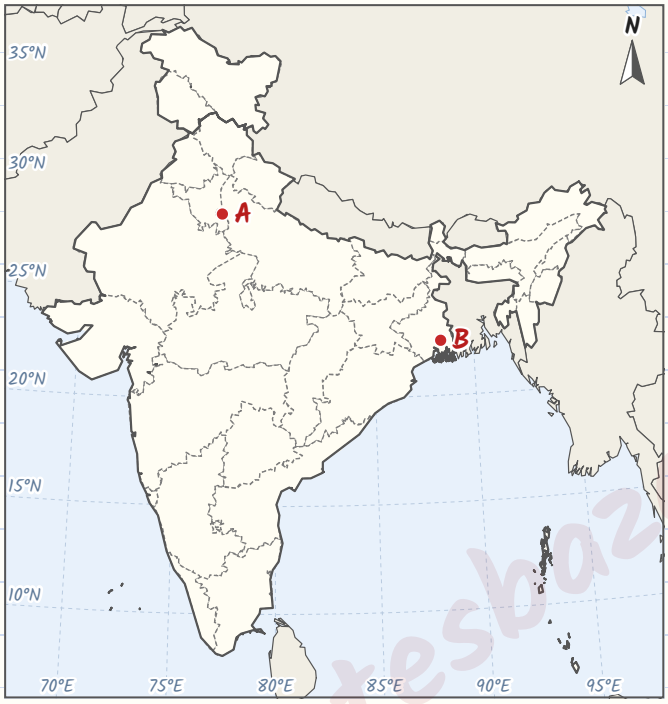
मानचित्र जैसा CBSE 2024 (61/3/1) में : A और B उन्हीं स्थानों पर अंकित जहाँ प्रश्न-पत्र में हैं

उत्तर। A = **दिल्ली**; B = **झाँसी** (अंक-योजना के अनुसार; हिंदी अंक-योजना भी "A) दिल्ली, B) झाँसी" देती है)। [2] नोट : दिल्ली और झाँसी विद्रोह के केंद्र थे जिन पर अंग्रेज़ों ने पुनः अधिकार किया

SAMPLE notesbazar.in

(दिल्ली सितंबर 1857 में, झाँसी अप्रैल 1858 में); योजना इन दो अंकित बिंदुओं के लिए ये नाम स्वीकार करती है, जो प्रश्न-पत्र के मानचित्र में दिल्ली और झाँसी पर हैं। VI : ब्रिटिश नियंत्रण वाले कोई दो स्थान, जैसे कलकत्ता, बंबई, मद्रास, इलाहाबाद।

CBSE 2024 · 61/4/1 भारत के इसी राजनीतिक रेखा-मानचित्र पर दो स्थानों को A और B, 1857 के विद्रोह के केंद्रों में चिह्नित किया गया है। इनको पहचानिए और उनके सही नाम उनके निकट खींची गई रेखाओं पर लिखिए।



मानचित्र जैसा CBSE 2024 (61/4/1) में : A और B उन्हीं स्थानों पर अंकित जहाँ प्रश्न-पत्र में हैं

उत्तर। A = **दिल्ली**; B = **कलकत्ता**। 2

अभ्यास-समूह

1. विद्रोह कब और कहाँ आरंभ हुआ ?
2. अवध को "चेरी" किसने कहा ?
3. संक्षिप्त बंदोबस्त का ताल्लुक़दारों पर क्या प्रभाव पड़ा ?
4. लखनऊ में विद्रोह का नेतृत्व किसने किया ?
5. रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ किसने चित्रित किया ?
6. 1857 को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम किसने कहा ?

उत्तर

उत्तर। 1. 10 मई 1857, मेरठ।
2. लॉर्ड डलहौज़ी (1851)।
3. उनका गाँवों का हिस्सा 67% से घटकर 38% रह गया; निरस्त्र, क़िले ध्वस्त।
4. बेगम हज़रत महल और बिरजिस क़द्र।
5. थॉमस जोन्स बार्कर।
6. वी.डी. सावरकर।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 25 of 26

बहुविकल्पीय प्रश्न : 20 MCQs

1. मेरठ में सिपाहियों ने बग़ावत की :
(a) 23 जून 1857 (b) 11 मई 1857 (c) 10 मई 1857 (d) 29 मार्च 1857

2. विद्रोहियों ने दिल्ली में किसे अपना नेता घोषित किया :
(a) बहादुर शाह ज़फ़र (b) नाना साहिब (c) वाजिद अली शाह (d) तात्या टोपे

3. कानपुर की सिपाही-लाइनों में पंचायतों की सूचना किसने दी :
(a) हेनरी लॉरेंस (b) कॉलिन कैंपबेल (c) आउटरम (d) कैप्टन हियरसे

4. शाह मल ने विद्रोह का नेतृत्व कहाँ किया :
(a) आरा (b) बरौत, उत्तर प्रदेश (c) फ़ैज़ाबाद (d) सिंहभूम

5. "डंका शाह" कौन थे :
(a) शाह मल (b) मौलवी अहमदुल्ला शाह (c) गोनू (d) कुँवर सिंह

6. कुँवर सिंह कहाँ के ज़मींदार थे :
(a) अवध (b) दिल्ली (c) झाँसी (d) आरा, बिहार

7. अफ़वाह थी कि एनफ़ील्ड कारतूसों पर किसकी चर्बी लगी थी :
(a) गाय और सूअर (b) बकरी (c) भेड़ (d) भैंस

8. भविष्यवाणी थी कि ब्रिटिश शासन किसकी शताब्दी पर समाप्त होगा :
(a) बक्सर (b) पानीपत (c) प्लासी (d) ईस्ट इंडिया कंपनी के चार्टर

9. व्यपगत का सिद्धांत किससे जुड़ा है :
(a) वेलेज़ली (b) बेंटिंक (c) कैनिंग (d) डलहौज़ी

10. अवध का विलय कब हुआ :
(a) 1801 (b) 1856 (c) 1851 (d) 1857

11. अवध पर सहायक संधि कब लादी गई :
(a) 1856 (b) 1765 (c) 1801 (d) 1798

12. वाजिद अली शाह को कहाँ निर्वासित किया गया :
(a) कलकत्ता (b) रंगून (c) कानपुर (d) लंदन

13. संक्षिप्त बंदोबस्त के बाद ताल्लुक़दारों का गाँवों में हिस्सा :
(a) 67% (b) 38% (c) 50% (d) 12%

14. अज़मगढ़ घोषणा कब जारी हुई :
(a) 10 मई 1857 (b) 1 नवंबर 1858 (c) 25 अगस्त 1857 (d) 23 जून 1857

15. अंग्रेज़ों ने हिंदुओं को मुसलमानों के विरुद्ध भड़काने (50,000 रुपये) का प्रयास कहाँ किया :
(a) कानपुर (b) दिल्ली (c) लखनऊ (d) बरेली

16. अंग्रेज़ों ने दिल्ली पर पुनः अधिकार कब किया :
(a) सितंबर 1857 (b) जून 1857 (c) मार्च 1858 (d) मई 1858

17. "इन मेमोरियम" किसने चित्रित किया :
(a) जोसेफ़ नोएल पैटन (b) थॉमस जोन्स बार्कर (c) राजा रवि वर्मा (d) अबनींद्रनाथ टैगोर

18. बहादुर शाह को कहाँ निर्वासित किया गया :
(a) अंडमान (b) कलकत्ता (c) लाहौर (d) रंगून

19. "क्लेमेंसी कैनिंग" का उपहास किसमें हुआ :
(a) द टाइम्स (b) पंच (c) इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़ (d) बंगाल गज़ट

20. "ख़ूब लड़ी मर्दानी" किसने लिखी :
(a) प्रेमचंद (b) महादेवी वर्मा (c) सुभद्राकुमारी चौहान (d) सावरकर

1 (c) · 2 (a) · 3 (d) · 4 (b) · 5 (b) · 6 (d) · 7 (a) · 8 (c) · 9 (d) · 10 (b) · 11 (c) · 12 (a) · 13 (b) · 14 (c) · 15 (d) · 16 (a) · 17 (a) · 18 (d) · 19 (b) · 20 (c)

अभिकथन-कारण (6)

(a) A और R दोनों सही हैं, R, A की सही व्याख्या है। (b) दोनों सही हैं, R, A की व्याख्या नहीं है। (c) A सही, R ग़लत। (d) A ग़लत, R सही।

1. A : लोगों ने आटे में हड्डी-चूर्ण की अफ़वाहों पर विश्वास किया। R : ब्रिटिश सुधारों ने धर्म और रीतियों पर आघात के भय पैदा कर दिए थे।
2. A : अवध के विलय ने सिपाहियों को क्षुब्ध किया। R : अनेक सिपाही अवध के गाँवों से आए थे।
3. A : वाजिद अली शाह अलोकप्रिय शासक थे। R : लोग शोक-गीत गाते हुए कानपुर तक उनके पीछे गए।
4. A : विद्रोहियों की घोषणाओं ने हिंदुओं और मुसलमानों दोनों से अपील की। R : उन्होंने मुग़लों के अधीन समुदायों के सह-अस्तित्व का गुणगान किया।
5. A : अंग्रेज़ों ने आम अंग्रेज़ों को भारतीयों पर मुक़दमा चलाने की अनुमति देने वाले कानून पारित किए। R : वे विद्रोह को शीघ्र कुचलना चाहते थे।
6. A : चित्र "रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ" ने ब्रिटिश वीरता का गुणगान किया। R : इसे जोसेफ़ नोएल पैंटन ने चित्रित किया था।

उत्तर-कुंजी : 1 (a) · 2 (a) · 3 (d) · 4 (a) · 5 (a) · 6 (c)

- **अंतिम रात का सार :** मेरठ 10 मई, दिल्ली 11 मई 1857; बहादुर शाह; स्वरूप (शस्त्रागार, ख़ज़ाना, अभिलेख जलाए); संचार (दूत, 7वीं अवध का पत्र, हियरसे की पंचायतें); नेता : नाना साहिब, रानी लक्ष्मीबाई, बिरजिस क़द्र और बेगम हज़रत महल, कुँवर सिंह, शाह मल, अहमदुल्ला शाह, गोनू; अफ़वाहें : कारतूस, हड्डी-चूर्ण, प्लासी की शताब्दी, रोटियाँ; कारण : बेंटिंक के सुधार, सती-निषेध, विधवा पुनर्विवाह, व्यपगत का सिद्धांत, मिशनरी, मुग़ल वंश का अंत।
- अवध : "चेरी" (डलहौज़ी 1851), सहायक संधि 1801, विलय 1856, वाजिद अली शाह प्रिय, दरबार भंग; ताल्लुक़दार (क़िले, सैनिक; संक्षिप्त बंदोबस्त 1856 : 67% → 38%); किसानों ने संरक्षण खोया; अवध के सिपाही : कम वेतन, नस्लीय अहंकार।
- विद्रोही : एकता (हिंदू-मुस्लिम, बरेली की विफलता), ब्रिटिश प्रतीकों के विरुद्ध, अज़मगढ़ घोषणा (25 अगस्त 1857), मुग़ल शैली का प्रशासन। दमन : सैनिक कानून, विशेष कानून, दिल्ली (सितंबर 1857), लखनऊ और कानपुर (मार्च 1858), ताल्लुक़दारों में फूट। चित्र : रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ (बार्कर), इन मेमोरियम (पैंटन), मिस व्हीलर, जस्टिस, क्लेमेंसी कैनिंग; राष्ट्रवादी : रानी लक्ष्मीबाई, सावरकर का "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम"।

SAMPLE · notesbazar.in